संत श्री आसारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

ऋषि प्रसाद

हिन्दी

मूल्य : रु. ६/-
अंक : १९०
अक्टूबर २००८
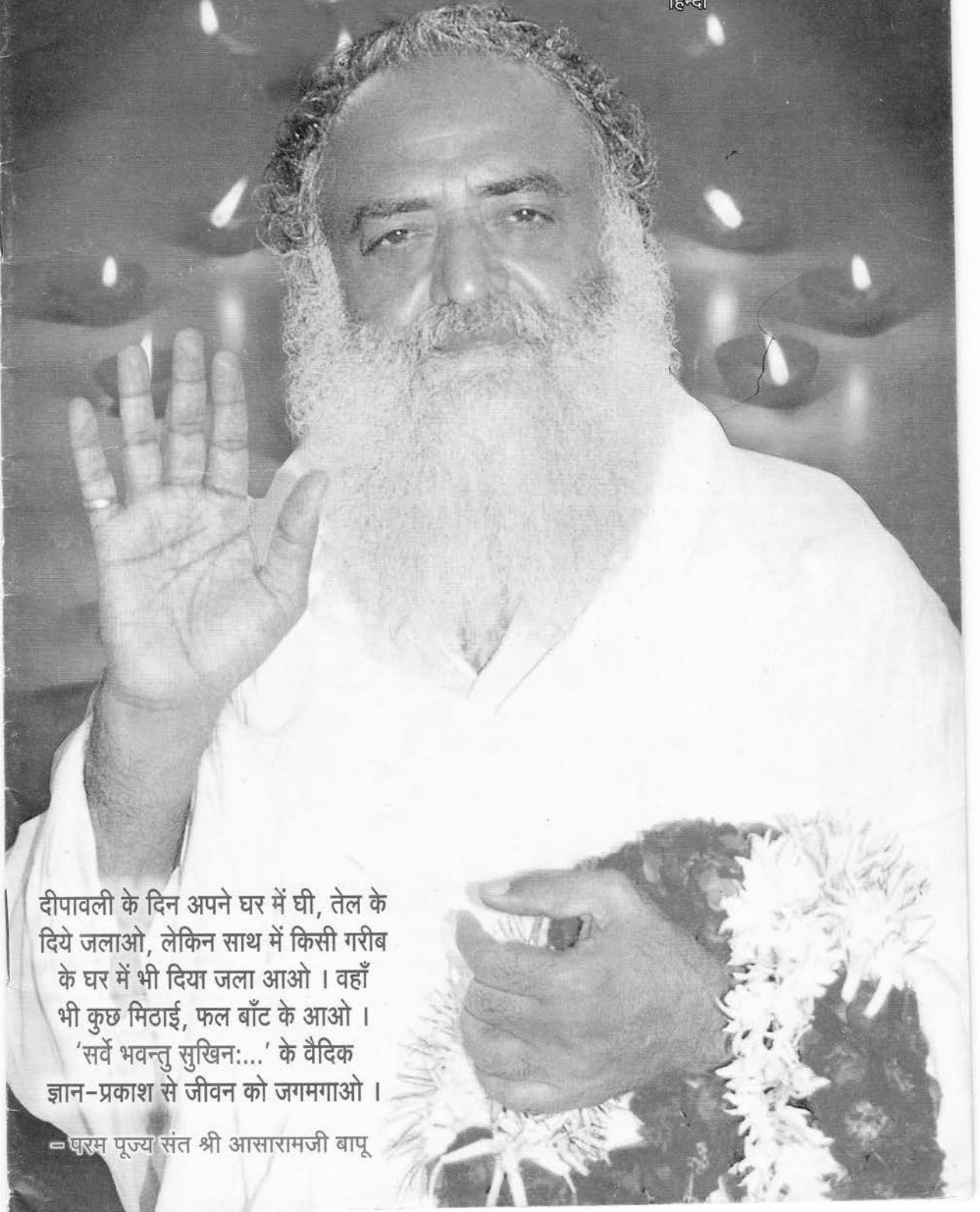
दीपावली के दिन अपने घर में घी, तेल के दिये जलाओ, लेकिन साथ में किसी गरीब के घर में भी दिया जला आओ । वहाँ भी कुछ मिठाई, फल बाँट के आओ । 'सर्वे भवन्तु सुखिन:....' के वैदिक ज्ञान-प्रकाश से जीवन को जगमगाओ ।

– परम पूज्य संत श्री आसारामजी बापू

कुप्रचार की आँधी हमको न रोक पाये, हम ऐसे नहीं पथिक जो पथ से लौट जायें।

देश भर में जोधपुर, पाली, जयपुर, सूरत, भैरवी, उल्हासनगर, पटियाला, श्योपुर, हरदोई, चंडीगढ़, पटना, नारनौल, गोंडा, झुंझुनू, गढ़वा, सारणी, रायबरेली, हमीरपुर, डुंगरपुर, मेरठ आदि कितनी जगहों पर विशाल संकीर्तन यात्राएँ निकाली गयीं इसका वर्णन करने बैठें तो विस्तार हो जायेगा । हजारों-लाखों कीर्तनयात्रियों ने बापूजी के सिद्धांतों का पालन किया। कहीं अप्रिय घटना नहीं घटी, कहीं अप्रिय शब्द नहीं बोला गया। मधुर-मधुर, पावन-पावन नाम की तुमुल ध्वनि में रँगकर दुष्प्रचार के वातावरण को सुप्रचार से पावन किया जा रहा है । अभी और जगहों पर भी कीर्तनयात्राएँ निकल रही हैं और निकलती रहेंगी । गाजियाबाद में भी फिर-फिर से कीर्तनयात्राएँ निकल रही हैं। कहाँ तक वर्णन करें ? जगह के अभाव में सभी स्थानों के फोटो नहीं दे पा रहे हैं इसका हमें खेद है।

ऋषि प्रसाद

मासिक पत्रिका

हिन्दी, गुजराती, मराठी, उड़िया, तेलगू व अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित

वर्ष : १९ अंक : १९०
अक्टूबर २००८ मूल्य : रु. ६-००
आश्विन-कार्तिक वि.सं.२०६५

सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित)

भारत में

(१) वार्षिक : रु. ६०/-
(२) द्विवार्षिक : रु. १००/-
(३) पंचवार्षिक : रु. २२५/-
(४) आजीवन : रु. ५००/-

अन्य देशों में

(१) वार्षिक : US $ 20
(२) द्विवार्षिक : US $ 40
(३) पंचवार्षिक : US $ 80

ऋषि प्रसाद (अंग्रेजी)	वार्षिक	द्विवार्षिक	पंचवार्षिक
भारत में	७०	१३५	३२५
अन्य देशों में	US$20	US$40	US$80

कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजा करें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर आश्रम की जिम्मेदारी नहीं रहेगी। अतः अपनी राशि मनीऑर्डर या ड्राफ्ट द्वारा ही भेजने की कृपा करें।

संपर्क पता : 'ऋषि प्रसाद', श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५ (गुजरात)।
ऋषि प्रसाद से संबंधित कार्य के लिए फोन नं. : (०७९) ३९८७७७१४, ६६११५७१४.
अन्य जानकारी हेतु : (०७९) २७५०५०१०-११, ३९८७७७८८, ६६११५५००.
e-mail : ashramindia@ashram.org
web-site : www.ashram.org

स्वामी : संत श्री आसारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
प्रकाशन स्थल : श्री योग वेदांत सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, संत श्री आसारामजी बापू आश्रम मार्ग, मोटेरा, अहमदाबाद, पो. साबरमती-३८०००५. गुजरात
मुद्रण स्थल : (१) अरावली प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स (प्रा.) लि., डब्ल्यू-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-II, नई दिल्ली-११००२०.
(२) विनय प्रिंटिंग प्रेस, ''सुदर्शन'', मिठाखली अंडरब्रीज के पास, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - ३८०००९. गुजरात
(३) शिव ऑफसेट (इं.) प्रा.लि., ७३, पोलो ग्राउंड, इंडस्ट्रियल एरिया, इंदौर (म.प्र.).
सम्पादक : श्री कौशिकभाई पो. वाणी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे. खो. मकवाणा, श्रीनिवास

Subject to Ahmedabad Jurisdiction

❀❀❀ अनुक्रमणिका ❀❀❀

(१) विचार मंथन २
　✻ संतों के द्वारा समाज को उद्बोधन
(२) श्रद्धा संजीवनी ५
　✻ दुनिया श्रद्धा के बल पर चलती है
(३) पर्व मांगल्य ७
　✻ प्रसाद के अनादर से लक्ष्मीजी रुष्ट
(४) आश्रम द्वारा बिहार में अविरत चल रहे हैं बाढ़-राहत सेवाकार्य ८
(५) सत्संग सुमन ९
　✻ भगवान सबको सद्बुद्धि दें
(६) मधु संचय १०
　✻ थकने नहीं थकान मिटाने आया हूँ
(७) शास्त्र दोहन ११
　✻ सत्यमेव जयते
(८) सफल जीवन के सोपान १४
　✻ फासले दिल से हटा दो
(९) परमहंसों का प्रसाद १५
　✻ पाया कहे सो बाँवरा...
(१०) ज्ञान गंगोत्री १७
　✻ अलख पुरुष की आरसी
(११) गीता-अमृत २०
　✻ अविकंप योग
(१२) चिंतनधारा २२
　✻ ऊँचे अधिकारियों को संत ज्यादा समय क्यों दें ?
(१३) सत्संग सरिता २३
　✻ ब्रह्मज्ञानी की मति कौन बखाने ?
(१४) जीवन पथदर्शन २४
　✻ जीवनशक्ति का विकास
(१५) बापू को बदनाम करनेवाला जेल की सलाखों के पीछे २५
(१६) संत श्री आसारामजी आश्रम के खिलाफ आक्षेप लगानेवाला फँसा २५
(१७) संत श्री आसारामजी आश्रम, बापूनगर में तोड़-फोड़ करनेवाला जेल में २६
(१८) आस्था पर हमला आतंकवाद से कम नहीं २७
(१९) स्वास्थ्य संजीवनी २८
　✻ त्रिदोष-सिद्धांत
　✻ आँवले के वृक्ष से लाभ उठायें
(२०) संस्था समाचार ३०
(२१) भक्तों के अनुभव ३२
　✻ अंतर्यामी पूज्य बापूजी ने की विलक्षण अंतःप्रेरणा
　✻ एक पल में १२ साल की मेहनत बच गयी !
　✻ पीलिया से मुक्ति मिली

संस्कार			केयर टीवी		TV9 गुजरात
रोज सुबह ७-५० बजे व दोपहर २-०० बजे	रोज दोपहर १२-२० बजे	रोज दोपहर १२-४० बजे	रोज सुबह ७-०० बजे से	रोज सुबह ५-४० बजे से	रोज सुबह ६.०० बजे से

संतों के द्वारा समाज को उद्बोधन

महंत श्री रामस्वरूपदासजी महाराज, अध्यक्ष, अखिल भारतीय चतुस्सम्प्रदाय अखाड़ा परिषद, वृंदावन : आज हमारे देश में ऐसे-ऐसे तपस्वी, ओजस्वी, मनीषी संत हैं, जो भारत में बैठकर विश्व का मार्गदर्शन करते हैं, पूरा विश्व जिनकी तरफ निगाहें लगाये हुए बैठा है, ऐसे संतों के ऊपर कुठाराघात किया जा रहा है । संत आसारामजी बापू जैसे महान युगद्रष्टा पर भी लांछन लगाये जा रहे हैं । इन सबको कैसे रोका जाय ? इसके लिए आज पूरे विश्व के नहीं तो कम-से-कम हिन्दुस्तान के हिन्दुओं को एक सूत्र में जुड़ना होगा ।

संत आसारामजी जैसे महान उपदेशक, जो इस विश्व को भारतीय संस्कृति का डिंडिमनाद करते हुए हमेशा सुनायी पड़ते हैं, आज उन्हीं आसारामजी के खिलाफ इस प्रकार का दुष्प्रचार हलकट अखबार और हलकट चैनल के माध्यम से क्यों किया जाने लगा, इसकी तह में जाना होगा । जितने भी सक्षम संत हैं, करीब-करीब उन्हींके ऊपर आरोप लगे हैं क्योंकि राष्ट्र को दिशा, राष्ट्र को गति इनके द्वारा ही प्राप्त होती है । संत आसारामजी, शंकराचार्यजी, रामदेवजी आदि जितने भी सक्षम संत हैं, वे अपने अनुयायियों को आदेशित करें कि आपलोग अपना निजी न्यूज चैनल चालू कीजिये और निष्पक्ष खबरें प्रसारित कीजिये ।

बन्धुओ ! जिस दिन आपने मन में सोच लिया कि हमें भ्रष्ट चैनलों को नहीं देखना तो इनकी तो उसी दिन मौत हो जायेगी क्योंकि आपका देखना ही इनकी जिंदगी है, आपका देखना ही इनका श्वास है । आपने हलकट चैनलों को देखना बंद कर दिया तो इनका श्वास समाप्त !

महाप्रभु रामचैतन्य बापू, महामंत्री, अखिल भारतीय संत समाज : भारत एक ऐसा देश है जिसको 'भारत माँ' के नाम से पुकारा जाता है, दूसरा कोई ऐसा देश नहीं जिसको माँ की उपमा दी गयी हो और इस देश में संत आते हैं, ऋषि आते हैं इसलिए बोलते हैं : 'भारत माता की जय !' पर आज यह दुःख की बात है कि यहाँ संतों को सताया जा रहा है, गाय काटी जा रही है ।

अरे, संत आसारामजी बापू ने कितना-कितना समाज को दिया है, कभी स्वार्थ का भाव नहीं रखा और जो उनके प्रति बुरा बोल रहे हैं, बुरा लिख रहे हैं, बुरा दिखा रहे हैं उनका भी बापू भला चाहते हैं । ऐसे संत के लिए जब कोई कुछ-का-कुछ कहे, उन पर कलंक लगाये तो हम सहन नहीं करेंगे । आज जागने की जरूरत है, सजग बनने की जरूरत है । सभी संतों के लिए आजकल यह षड्यंत्र चल रहा है । यह अभी हम सहन नहीं करेंगे !

महामंडलेश्वर आचार्य श्री सुनील शास्त्रीजी महाराज :
साधु अवग्या कर फलु ऐसा ।
जरइ नगर अनाथ कर जैसा ॥

जब प्रकृति सत्ता हाथ में ले लेती है तो कोई नहीं बच सकता । अभी भी वक्त है । सुबह का भूला शाम को घर आये तो भूला ना कहलाये । षड्यंत्रकारियो ! संतों पर इतना अत्याचार मत करो कि संत-समाज के हृदय से तुम्हारे लिए फटकार निकले ।

महामंडलेश्वर स्वामी परमात्मानंदजी महाराज, वृंदावन : गोस्वामीजी कहते हैं- संत सरल चित... संत सरल होता है । आज मैं सारे भारतवर्ष के सामने यह बात रखने जा रहा हूँ और डंके की चोट पर कहने जा रहा हूँ कि हमारे बापू आसारामजी जैसा संत ही नहीं है कोई दुनिया में । हमारे बापू बड़े सरल हैं । सरल शब्द में 'स', 'र', 'ल' है । 'स' माने सीता, 'र' माने राम और 'ल' माने लक्ष्मण । यदि आपको सीता, राम और लक्ष्मण के दर्शन करने हैं तो बापू के चरणारविंद में झुक जाओ, इनसे बड़ा दुनिया में कोई संत नहीं है, इनसे बड़ा दुनिया में कोई मंदिर नहीं है। हमारे महाराज सरल हैं और सीता, राम व लक्ष्मण की प्रतिमूर्ति हैं । जानते हैं सीता कौन है, राम कौन है और लक्ष्मण कौन है ?

गोस्वामीजी कहते हैं : सीता साक्षात् भक्तिघन परमात्मा है, लक्ष्मण साक्षात् वैराग्यघन परमात्मा है और राम साक्षात् ज्ञानघन परमात्मा है। इसका अर्थ क्या है ? पूज्य आसारामजी बापू को देखो तो पता लग जायेगा कि वे भक्ति, वैराग्य और ज्ञान - तीनों के समुच्चय हैं । बापूजी महान थे, महान हैं और महान रहेंगे ।

हमें तो बापूजी के लिए जब भी आवाहन किया जायेगा, वृंदावन आश्रम-प्रमुख संत की ओर से हम आपको वचन देते हैं : 'एक नहीं, दो नहीं, सौ नहीं, पाँच सौ नहीं, जितने महापुरुष चाहेंगे, जब चाहेंगे, जहाँ चाहेंगे, हम सबको लेकर उपस्थित हो जायेंगे ।' श्रीधाम वृंदावन के, बरसाना के, गोप-गोवर्धन के, गोकुल के, मथुरा के हम सारे महंत-संत आपको वचन देते हैं कि 'हम महाराजजी के साथ हैं ।'

स्वामी मधुसूदनजी महाराज, दादू दीनदयाल आश्रम (दादू सम्प्रदाय), राजस्थान : सोओ मत, जागते रहो । अब ढीला बर्ताव करने का समय नहीं है । जरा सोचें, अन्य धर्म, अन्य मनचले लोग यह जो षड्यंत्र रच रहे हैं, क्या कारण है कि वे हमारे संतों की ही निंदा कर रहे हैं ? संतों की निंदा नहीं होती, संतों को कोई फर्क नहीं पड़ता, हमारे हिन्दू माताओं-बहनों-भाइयों के ऊपर इसका असर पड़ता है क्योंकि हमारी जो संस्कृति है वह भाव और धर्म के ऊपर टिकी है, भाव और श्रद्धा के ऊपर टिकी है । इसको छीनना चाहते हैं वे लोग । इसलिए हम इस संदर्भ में सचेत रहें ।

संतों के ऊपर ही आरोप क्यों लगाये जा रहे हैं ? संत क्या देते हैं ? ऋषि क्या देते आये हैं ? संस्कार व शिक्षा । गुरुकुलों में संस्कार और शिक्षा अनादि काल से मिलती आयी है । इसलिए वे लोग चाहते हैं कि जनता की संतों के प्रति यह भावना, श्रद्धा टूट जाय तो जीवन अपने-आप ही टूट जायेगा । फिर पीछे रहेगा ही क्या ? इसलिए ये लोग संत और गुरु के प्रति समाज की श्रद्धा, भावना तोड़ना चाहते हैं । तो हमें जागृति लानी है, सचेत रहना है कि ये झूठे आरोप जो लगा रहे हैं वे समाज की कमजोरी ढूँढ़ रहे हैं कि किस तरह समाज कमजोर हो । आप देखिये, हमारी हिन्दू संस्कृति किस पर टिकी है ? यह टिकी है गीता, गंगा, गुरु और गाय के आधार पर । अब बताइये कि संतों की निंदा होगी, इस देश के अंदर संत नहीं होंगे तो शिक्षा और संस्कार कौन देगा ? जिन संतों ने घर-बार छोड़ के समाज के लिए अपना जीवन दे दिया, उन्हींके विरुद्ध अनगिनत झूठे षड्यंत्र रच रहे हैं, इल्जाम लगा रहे हैं यह बड़ी शोचनीय बात है ।

श्री जगजीतन महाराजजी, महामंत्री, धर्म शिक्षामंडल, वाराणसी : जैसे आदिगुरु शंकराचार्यजी ने चार मठों की स्थापना की और पूरे भारतवर्ष को एक कड़ी में पिरोया, सांस्कृतिक रूप से जोड़ा, वैसे अब पुनः यह आवश्यक हो गया है कि पूरे भारत के संत एकजुट हों तथा

हिन्दू संतों के विरुद्ध षड्यंत्रकारियों द्वारा इस तरह के जो कृत्य किये जा रहे हैं, उन दुष्कृत्यों का भंडाफोड़ किया जाय।

अफवाहों में विश्वास न करें और सनातन धर्म के जो महापुरुष हैं, संत हैं उनके महान कार्य से जलन की भावना से जो विकृत बातें एवं आचरण कर रहे हैं उनके बहकावे में न आयें। अपने गुरुओं के प्रति, अपने संतों के प्रति आदर भावना रखें और इस तरह के दुष्कृत्यों का भंडाफोड़ करके मुँहतोड़ जवाब दें। अब संगठित होकर इस तरह के दुष्प्रयासों को खत्म करने की आवश्यकता है। भारत और भारत की संस्कृति को तोड़ने के प्रयासों को विफल करना है।

महंत श्री नागेन्द्र स्वामी, चैतन्यपीठ, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) : हमारी सहिष्णुता का आज यह फल मिल रहा है कि पहले तो भगवान के मंदिर तोड़े गये, हमारे बहुसंख्यक हिन्दुओं को बहला-फुसलाकर उनका धर्मान्तरण किया जा रहा है और अब जो साधु, संत, महात्मा आप लोगों के बीच आकर हिन्दू धर्म का अलख जगाते हैं उनको बदनाम करने की साजिश की जा रही है। हम यह अपमान नहीं सहेंगे।

उद्धवजी महाराज, वारकरी सम्प्रदाय, उदगीर (महा.) : हमारे आसाराम बापूजी जो क्रांतिकारी संत हैं, विश्ववंदनीय संत हैं, इनके ऊपर जो आरोप-प्रत्यारोप चल रहे हैं यह किनकी मानसिकता है ? यह मानसिकता है विदेशियों की। कन्याकुमारी से कश्मीर तक का हिन्दू जाग उठा है। हम डरनेवाले नहीं हैं। हम अकेले नहीं हैं। जब बापूजी के साथ षड्यंत्र हुआ तो सब समाज जाग उठा है। अब जगने की रात है, सोने की नहीं।

श्री योगेन्द्रजी महाराज, वारकरी सम्प्रदाय : मेरे हिन्दू संस्कृति के संतों पर जो कुठाराघात हो रहा है, उसका मुकाबला करने के लिए हमें एकजुट होना है।

अन्य वक्तव्य

श्री अशोक सिंघलजी, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद : मुझको कुछ वर्ष पहले पता चला था कि एक नियोजनबद्ध योजना हुई है कि देश की आस्था के जितने भी बड़े स्थान हैं, जैसे कि बड़े-बड़े महात्मा, उनके चरित्र-हनन का कार्यक्रम भी शुरू किया जायेगा और उन पर से समाज की आस्था समाप्त करने के प्रयत्न होंगे। और उसी समय हमने देखा कि शंकराचार्यजी को हत्या के आरोप में गिरफ्तार किया गया, जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता है। अरे, कल्पना छोड़ दीजिये, हमारा पूरा हिन्दू समाज इसे कभी बरदाश्त भी नहीं कर सकता। उनके ऊपर तरह-तरह के स्कैंडल (कलंक) लगाये गये। आज वही कार्य अपने आसारामजी बापू के विरुद्ध किया जा रहा है। बापूजी आज इतने बड़े जाने-माने संत हैं, जो आज हमारी हिन्दू संस्कृति और हमारी मान्यताओं को समाज में प्रतिष्ठित करने में लगे हुए हैं। उन्होंने आदिवासी, वनवासी समाज के लोगों को भी अपनी संस्कृति के प्रति निष्ठावान बनाने का जो महान कार्य किया है, इसके लिए पूरा हिन्दू समाज उनका ऋणी रहेगा और कभी उस ऋण को चुका नहीं पायेगा। ऐसे महान व्यक्तित्व ने अनेक प्रकार के सेवाकार्य वनवासी क्षेत्रों में खड़े किये, यह जिनके लिए बरदाश्त से बाहर की चीज थी उन्होंने ही मीडिया के माध्यम से महाराजजी को ऐसे बदनाम करना चाहा है जैसे शंकराचार्यजी को (शेष पृष्ठ २६ पर)

दुनिया श्रद्धा के बल पर चलती है

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

तर्क के बल से दुनिया नहीं चलती, डंडे के बल से दुनिया नहीं चल सकती। दुनिया को चला रहे हैं श्रद्धालु लोग। मंदिर भी चला रहे हैं श्रद्धालु लोग, मसजिद व चर्च भी चला रहे हैं श्रद्धालु लोग, गौशालाएँ भी चला रहे हैं श्रद्धालु लोग, आश्रमों की सेवा भी कर रहे हैं श्रद्धालु लोग और आश्रमों में बैठे भी हैं श्रद्धालु लोग। व्यापार-धंधा, प्रशासन और वोट की लेन-देन भी तो श्रद्धा के बल से ही होती है न ! श्रद्धा कहो, भरोसा कहो, विश्वास कहो, इसीके बल से चल रहा है सब। बड़े उद्योग, बड़े आविष्कार भी तो श्रद्धा के बल से ही होते हैं। दुनिया श्रद्धा के बल से चलती है।

भगवान को धरती पर ला रहे हैं श्रद्धालु लोग, भगवान के गीत गा रहे हैं श्रद्धालु लोग, भगवान के प्यारे संतों का आदर-सम्मान भी कर रहे हैं श्रद्धालु लोग। यह दुनिया श्रद्धा के बल से रसमयी है, श्रद्धा के बल से स्नेहमयी है।

कोई किसीकी श्रद्धा तोड़ता है तो जघन्य पाप करता है, अक्षम्य पाप करता है।

कबीरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार।
एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार ॥

संत तुलसीदासजी बोलते हैं :

जाके प्रिय न राम-बैदेही।
तजिये ताहि कोटि बैरी सम, जद्यपि परम सनेही ॥
(विनयपत्रिका)

जिसको भगवान प्यारे नहीं हैं, जिसके हृदय में श्रद्धा नहीं है, उसको करोड़ों दुश्मनों जैसा समझकर छोड़ देना चाहिए, चाहे कैसा भी मित्र हो। अगर पिता भगवान के रास्ते जाने से रोकता है तो प्रह्लाद की नाईं पिता को ठुकरा देना। पति रोकता है तो मीराबाई की नाईं उसकी बात ठुकरा देना। पत्नी टोकती है तो राजा भर्तृहरि की नाईं उसकी बात ठुकरा देना।

जो श्रद्धा तोड़ता है और भगवान के रास्ते चलने से रोकता है वह हमारा परम स्नेही होते हुए भी करोड़ों दुश्मनों के बराबर है। संत ज्ञानेश्वरजी के वचन हैं : ''हे श्रद्धा माऊली ! तू मेरे हृदय में सदा वास करना।''

वेदों में तो 'श्रद्धा सूक्त' है, अलग से विभाग है।

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते ।
श्रद्धां हृदय्य१याकूत्या श्रद्धया विन्दते वसु ॥

'देवगण और याजक मनुष्य वायुदेव के संरक्षण में श्रद्धा की उपासना करते हैं। अंतःकरण में किसी संकल्प के जागृत होने पर वे श्रद्धा का ही आश्रय लेते हैं। श्रद्धा से मनुष्य धन-वैभव अर्जित करते हैं।' **(ऋग्वेद : १०.१५१.४)**

श्रद्धां प्रातर्हवामहे श्रद्धां मध्यन्दिनं परि ।
श्रद्धां सूर्यस्य निम्रुचि श्रद्धे श्रद्धापयेह नः ॥

'हम प्रातःकाल श्रद्धा का आवाहन करते हैं, मध्याह्नकाल में श्रद्धा का आवाहन करते हैं और सूर्यास्तकाल में भी श्रद्धा की ही उपासना करते हैं। हे श्रद्धे ! आप हम सबको श्रद्धा से परिपूर्ण करें।' **(ऋग्वेद : १०.१५१.५)**

हमारी संस्कृति में प्रातःकाल, दोपहर की संध्या और शाम की संध्या में भी श्रद्धा देवी का आवाहन किया गया है, प्रार्थना की गयी है।

१२ साल के अष्टावक्रजी ८० साल के विशालकाय, विशाल राज्य के धनी राजा जनक को कहते हैं : **श्रद्धत्स्व तात श्रद्धत्स्व...।** जनक में श्रद्धा थी तभी तो अष्टावक्रजी को ऊँचे आसन पर बिठाते हैं, प्रणाम करते हैं, अर्घ्य-पाद से पूजन करते हैं। फिर भी पूर्णता पाने के लिए पूर्ण

श्रद्धा की आवश्यकता को ध्यान में रखकर अष्टावक्रजी ने कहा : **श्रद्धत्स्व तात श्रद्धत्स्व...।** अर्जुन में श्रद्धा थी, अर्जुन श्रीकृष्ण की आज्ञा मानते थे, आदर करते थे फिर भी उनकी श्रद्धा को दृढ़ करने के लिए श्रीकृष्ण ने 'गीता' में अनेक बार संकेत किया कि 'अश्रद्धा मत करना।'

अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।

'विवेकहीन और श्रद्धारहित संशययुक्त मनुष्य परमार्थ से अवश्य भ्रष्ट हो जाता है।' (४.४०)

मां तु वेद न कश्चन ।

'हे अर्जुन ! मुझको कोई भी श्रद्धा-भक्तिरहित पुरुष नहीं जानता।' (७.२६)

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥

'हे परंतप ! इस उपर्युक्त धर्म में श्रद्धारहित पुरुष मुझको न प्राप्त होकर मृत्युरूप संसारचक्र में भ्रमण करते रहते हैं।' (९.३)

श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥

'बिना श्रद्धा के किये जानेवाले यज्ञ को तामस यज्ञ कहते हैं।' (१७.१३)

अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥

'हे अर्जुन ! बिना श्रद्धा के किया हुआ हवन, दिया हुआ दान व तपा हुआ तप और जो कुछ भी किया हुआ शुभ कर्म है, वह समस्त 'असत्' - इस प्रकार कहा जाता है, इसलिए वह न तो इस लोक में लाभदायक है और न मरने के बाद ही।' (१७.२८)

बारहवें अध्याय का उपक्रम और उपसंहार पराकाष्ठा की श्रद्धा से ही हुआ है।

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥

'मुझमें मन को एकाग्र करके निरंतर मेरे भजन-ध्यान में लगे हुए जो भक्तजन अतिशय श्रेष्ठ श्रद्धा से युक्त होकर मुझ सगुणरूप परमेश्वर को भजते हैं, वे मुझको योगियों में अति उत्तम योगी मान्य हैं।' (१२.२)

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते ।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥

'जो श्रद्धायुक्त पुरुष मेरे परायण होकर इस ऊपर कहे हुए धर्ममय अमृत को निष्काम प्रेमभाव से सेवन करते हैं, वे भक्त मुझको अतिशय प्रिय हैं।' (१२.२०)

श्रीकृष्ण कहते हैं कि 'जिसकी अति श्रद्धा है वह मुझको अति प्रिय है।' फिर भी जो समाज की श्रद्धा तोड़ते हैं वे अपनेको और अपने परिवार को कौन-से नरकों में ले जाना चाहते हैं ? श्रद्धा में वह शक्ति है जो गोल-मटोल शालग्राम से भी लाभ दिला देती है, गोल-मटोल शिवलिंग से भी आत्मशिव का प्रसाद दिला देती है। श्रद्धा में ताकत है मन, बुद्धि को चैतन्य के रस से, ज्ञान से भर देने की। इसलिए कहा गया है :

श्रद्धापूर्वाः सर्वधर्मा मनोरथफलप्रदाः ।
श्रद्धया साध्यते सर्वं श्रद्धया तुष्यते हरिः ॥

'श्रद्धापूर्वक आचरण में लाये हुए सब धर्म मनोवांछित फल देनेवाले होते हैं। श्रद्धा से सब कुछ सिद्ध होता है और श्रद्धा से ही भगवान श्रीहरि संतुष्ट होते हैं।' **(नारद पुराण : ४.१)**

श्रद्धा गयी तो मानो सर्वनाश हो गया ! फिर कितने भी प्राणायाम करते रहो, कितने भी मंत्र करते रहो। श्रद्धालु तो भगवद्दर्शन, संत, गुरु के दर्शनमात्र से आनंदित, पुलकित होता है। तार्किक दस घंटे मेहनत करके भी उतना आनंदित नहीं हो सकता। श्रद्धालु के देखते-ही-देखते सारे शरीर में श्रद्धा की पवित्र लहर छा जाती है। तार्किक उसे क्या जाने ? वह तो रॉक और पॉप में झूम-झूम के थकेगा। ऐसे झूम-झूम के तो सत्यानाश हो जायेगा।

तार्किकों के बल से दुनिया नहीं चलती, डंडेबाजों के बल से दुनिया नहीं चलती; भगवान के दुलारे, हरि के प्यारे श्रद्धालुओं के बल से दुनिया चलती है। नेताओं में भी 'प्रजा के हित में हमारा हित है' ऐसी श्रद्धा रखनेवाले ही श्रेष्ठ नेता होते हैं, क्या ख्याल है ? ❐

प्रसाद के अनादर से लक्ष्मीजी रुष्ट

(दीपावली : २८ अक्टूबर)

'श्रीमद्देवी भागवत' के नवम स्कंध में आता है कि एक बार मुनिवर दुर्वासाजी वैकुंठ से कैलास शिखर पर जा रहे थे । इन्द्र ने देखा तो मस्तक झुकाकर उन्हें प्रणाम किया । उनके शिष्यों को भी भक्तिपूर्वक प्रसन्नता के साथ इन्द्र ने संतुष्ट किया । तब शिष्योंसहित मुनिवर दुर्वासा ने इन्द्र को आशीर्वाद दिया, साथ ही भगवान विष्णु द्वारा प्राप्त मनोहर पारिजात पुष्प भी उन्हें दिया । राज्यश्री के गर्व से गर्वित इन्द्र ने मोक्षदायी उस पुष्प को अपने ऐरावत हाथी के मस्तक पर रख दिया । उस पुष्प का स्पर्श होते ही रूप, गुण, तेज व अवस्था इन सबसे सम्पन्न होकर ऐरावत भगवान विष्णु के समान हो गया । फिर तो इन्द्र को छोड़कर वह घोर वन में चला गया । उस समय इन्द्र तेज से युक्त उस ऐरावत पर शासन नहीं कर सके ।

इन्द्र ने उस दिव्य पुष्प का परित्याग कर तिरस्कार किया है यह जानकर मुनिवर दुर्वासा के रोष की सीमा न रही । उन्होंने क्रोधावेश में शाप देते हुए कहा : ''अरे ! मैंने तुम्हें भगवान के प्रसादरूप यह पारिजात पुष्प दिया, गर्व के कारण तुमने स्वयं इसका उपयोग न करके हाथी के मस्तक पर रख दिया । नियम तो यह है कि श्रीविष्णु को समर्पित किये हुए नैवेद्य, फल अथवा जल के प्राप्त होते ही उसका उपभोग करना चाहिए । सौभाग्यवश प्राप्त हुए भगवान के नैवेद्य का जो त्याग करता है, वह पुरुष श्री और बुद्धि से भ्रष्ट हो जाता है । इन्द्र ! तुमने जो यह अपराध किया है उसके फलस्वरूप लक्ष्मी तुम्हें छोड़कर भगवान श्रीहरि के समीप चली जाय ।''

तत्पश्चात् देवराज इन्द्र ने देखा कि उनकी अमरावती पुरी दैत्यों और असुरों से भलीभाँति भरी हुई है । ऐसी स्थिति में वे गुरुदेव बृहस्पतिजी के पास चले गये और उनके चरणकमलों में मस्तक झुकाकर उच्च स्वर से रोने लगे ।

तदनंतर गुरु बृहस्पतिजी के उपदेश से भगवान नारायण का ध्यान करके देवराज इन्द्र ब्रह्माजीसहित सम्पूर्ण देवताओं को साथ ले वैकुंठ पधार गये । आँखों में आँसू भरकर समस्त देवतागण परम प्रभु भगवान श्रीहरि की स्तुति करने लगे । देवताओं को दीन दशा में पड़े हुए देखकर भगवान श्रीहरि ने उनसे कहा : ''देवताओ ! भय मत करो । मैं तुम्हें परम ऐश्वर्य बढ़ानेवाली अचल लक्ष्मी प्रदान करूँगा परंतु मैं कुछ समयोचित बात कहता हूँ, उस पर तुम लोग ध्यान दो ।

सदा मेरे भजन-चिंतन में लगा रहनेवाला निरंकुश भक्त जिस पर रुष्ट हो जाता है, उसके घर लक्ष्मीसहित मैं नहीं ठहर सकता - यह बिल्कुल निश्चित है । जिस स्थान पर मेरे भक्तों की निंदा होती है वहाँ रहनेवाली महालक्ष्मी के मन में अपार क्रोध उत्पन्न हो जाता है । अतः वे उस स्थान को छोड़कर चल देती हैं ।

जो मेरी उपासना नहीं करता तथा एकादशी और जन्माष्टमी के दिन अन्न खाता है, उस मूर्ख व्यक्ति के घर से भी लक्ष्मी चली जाती हैं । जो कायर व्यक्तियों का अन्न खाता है, निष्प्रयोजन तृण तोड़ता है, नखों से पृथ्वी को कुरेदता रहता है, जो निराशावादी है, सूर्योदय के समय भोजन करता है, दिन में सोता और मैथुन करता है और जो सदाचारहीन है, ऐसे मूर्खों के घर से मेरी प्रिया लक्ष्मी चली जाती हैं ।

जहाँ भगवान श्रीहरि की चर्चा होती है और उनके गुणों का कीर्तन होता है, वहीं पर सम्पूर्ण मंगलों का भी मंगल प्रदान करनेवाली भगवती लक्ष्मी निवास करती हैं । **(शेष पृष्ठ २९ पर)**

'नर सेवा ही नारायण सेवा' के भाव से

आश्रम द्वारा बिहार में अविरत चल रहे हैं बाढ़-राहत सेवाकार्य

चाहे कच्छ भुज के भूकंप हों या सुनामी का तांडव, गुजरात या बिहार की बाढ़ हो या अन्य कोई प्राकृतिक आपदा... हर विपत्ति में बापूजी की प्रेरणा से नररूप नारायण की सेवा होती रही है और होती रहेगी ।

बिहार में कोसी नदी में आयी बाढ़ ने अनेक गाँवों का अस्तित्व समाप्त कर दिया । पूज्य बापूजी के निर्देशानुसार तत्काल दिल्ली, अमदावाद व अन्य अनेक स्थानों से राहत-सामग्री से सुसज्ज सेवादल असरग्रस्त क्षेत्र में पहुँचे । भागलपुर व आसपास की अन्य समितियों के पदाधिकारी व शिष्यगण बड़े उत्साह से सेवाकार्य में जुटे हुए हैं। भागलपुर के नौगछिया में आश्रम की सेवा समिति का भाग्यशाली सेवादल जब राहत-सामग्री लेकर पहुँचा तो भूख से मुरझाये चेहरे खिल उठे । यहाँ हजारों लोगों को चिउड़ा, गुड़, रोटी आदि के पैकेट वितरित किये गये ।

सहरसा जिले के सोनवर्षा प्रखंड के सोहा, हरीखंड, देवहट्ट, सुरहाट बिंहटा, सहसोल पंचायत इत्यादि गाँवों के हजारों आपदाग्रस्त लोगों में प्रतिदिन खिचड़ी, सब्जी, चावल आदि का वितरण किया जा रहा है । खाद्य-सामग्री का अभाव झेल रहे लोगों को इससे बड़ी राहत मिल रही है । यहाँ आश्रम की ओर से पीड़ितों के इलाज के लिए आयुर्वैदिक व एलोपैथिक चिकित्सा शिविर भी लगाये गये हैं, जिनके द्वारा रोज हजारों लोगों को चिकित्सा-सुविधा उपलब्ध करायी जा रही है । यहाँ सैनीटेशन कैम्प भी लगाये गये हैं। सोनवर्षा में पूज्य बापूजी की प्रेरणा से चलाये जा रहे सेवा-शिविरों की वहाँ के प्रशासन ने भी सराहना की है।

मधेपुरा जिले में बिहारीगंज, अरार आदि अनेक स्थानों में अन्नशालाओं के द्वारा प्रतिदिन हजारों आपदाग्रस्तों को भोजन मिल रहा है। यहाँ चिकित्सा-शिविरों के माध्यम से प्रतिदिन सैकड़ों लोगों को स्वास्थ्य-सुरक्षा की जानकारी व औषधियाँ प्रदान की जा रही हैं । संक्रामक रोगों से लोगों की सुरक्षा हेतु आश्रम के सैनीटेशन कैम्प व चिकित्सा शिविर वरदान सिद्ध हो रहे हैं । यहाँ बाल संस्कार केन्द्र, सत्संग, कीर्तन आदि के द्वारा बाढ़पीड़ितों के सर्वांगीण विकास के प्रयास किये जा रहे हैं । आश्रम की तरफ से मधेपुरा व सहरसा के पीड़ित लोगों में खाद्य-सामग्री के साथ-साथ दैनिक उपयोग की वस्तुएँ जैसे - साबुन, तेल, वस्त्र, बर्तन, माचिस, मोमबत्ती इत्यादि का वितरण भी किया जा रहा है । १५,००० लोग इससे लाभान्वित हुए हैं ।

मधेपुरा जिले के पुरैनी प्रखंड में भीषण जलप्रवाह से हाहाकार मचा था । आश्रम की ओर से यहाँ हजारों लोगों को चिउड़ा, चीनी, बिस्कुट के पैकेट, मोमबत्ती, माचिस आदि जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण किया गया । संक्रामक रोगों से रक्षा के लिए इन क्षेत्रों में आश्रम के सेवाधारियों ने ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव किया तथा अंचल अधिकारी के अनुरोध पर उन्हें छिड़काव हेतु आश्रम की ओर से ब्लीचिंग पाउडर की बोरियाँ दी गयीं ।

जोगिराज मुसहरी, जोगिराज हरिजन टोला (ढगर टोली), जोगिराज आदिवासी टोला, बाला टोला, बलिया एवं कुसंडी दीरा, कुसंडी, वासुदेवपुर एवं आसपास के क्षेत्रों में हजारों लोगों को खाद्य व अन्य जीवनोपयोगी सामग्री के साथ बारिश से रक्षा हेतु प्लास्टिक तथा नये कपड़ों का बड़ी संख्या में वितरण किया गया । यहाँ हजारों लोगों के लिए भोजन व्यवस्था की गयी । त्रिवेणीगंज प्रखंड, जि. सुपोल में चिकित्सा-शिविर जारी है जिसमें सैंकड़ों लोग चिकित्सा-सेवा का लाभ ले रहे हैं ।

कटिहार जिले में आश्रम की स्थानीय सेवा-समिति द्वारा प्रतिदिन हजारों लोगों में भोजन के अलावा कपड़े, साबुन, मोमबत्ती इत्यादि विभिन्न जीवनोपयोगी सामग्रियों का वितरण भी जारी है ।

पूरे बिहार में २५,००० से ३०,००० लोगों को प्रतिदिन भोजन कराया जा रहा है और पीड़ितों में फूड पैकेट, वस्त्र, बर्तन, साबुन, तेल, मोमबत्ती, माचिस आदि का वितरण किया जा रहा है ।

(शेष पृष्ठ २९ पर)

भगवान सबको सद्बुद्धि दें

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

एक साधारण जीव से विभिन्न योनियों में घूमते-घूमते मनुष्य हुए और मनुष्य से चलते-चलते मानव, महामानव, देवमानव... ऐसे करते-करते परम पुरुष का ज्ञान देने की, भगवान का स्नेही, भगवान का सखा बनाने की, अरे ! भगवान का बाप भी बनने की व्यवस्था जिस संस्कृति में है, उसे हिन्दू संस्कृति कहते हैं, भारतीय संस्कृति कहते हैं। दूसरे किसी मजहब में भगवान का बाप बनने की व्यवस्था हमने नहीं देखी-सुनी ।

यह भारतीय संस्कृति का मनुष्य है जो भगवान का बाप बनने तक की यात्रा कर लेता है, भगवान का गुरु बनने की यात्रा कर लेता है, भगवान का दादागुरु बनने की यात्रा कर लेता है। हमारा सौभाग्य है कि हम भारतीय संस्कृति में जन्मे हैं और जन्मजात हिन्दू हैं। दूसरे मजहबवालों को तो उनके मजहबवाले कुछ विधि करके बनाते हैं लेकिन हमें हिन्दू बनाने के लिए किसी ब्राह्मण या वैद्य की जरूरत नहीं पड़ती, हम तो जन्मजात हिन्दू हैं क्योंकि वैदिक संस्कृति में जन्मे हैं। ऐसी महान संस्कृति को छिन्न-भिन्न करने के लिए कभी किसी संत पर, कभी किसी समाज पर, कभी किसी सम्प्रदाय के महापुरुषों पर न जाने कैसे-कैसे लांछन लगाकर, कैसे-कैसे आँधी-तूफान चलवाकर पैसे के बल से या और किसी बल से हमारी संस्कृति को तहस-नहस करने पर कुछ लोग तुले हुए हैं ।

जयेन्द्र सरस्वतीजी को इस आँधी ने घेरा था तो हमारे देश के कुछ समझदार मैदान में खड़े हुए और षड्यंत्रकारियों ने जिन-जिनको भी भेजा था उनके कुचक्र को समझकर साधक, भक्त और समाज के लोग सावधान हो गये थे ।

इल्जाम लगानेवालों ने
इल्जाम लगाये लाख मगर ।
तेरी सौगात समझ के
हम सिर पे उठाये जाते हैं ।।

हम और मजबूत हुए जाते हैं । इल्जाम सहनेवाले का बिगड़ता नहीं है, इल्जाम लगानेवाले को साधक तुच्छ नजर से देखते हैं और समझदार लोग भी बोलते हैं कि जो द्वेषपूर्ण कहानियाँ बनाकर संतों के ऊपर ऐसे मनःकल्पित इल्जाम लगा देते हैं उनकी क्या गति होगी ! संत तुलसीदासजी ने कहा :

हरि हर निंदा सुनइ जो काना ।
होइ पाप गोघात समाना ।।
हर गुर निंदक दादुर होई ।
जन्म सहस्र पाव तन सोई ।।

भारतीय संस्कृति तथा संतों के विरुद्ध साजिश कर-कराके बदनाम करनेवाले भैया ! आपके पैसे यहीं रह जायेंगे लेकिन जो कर्मबंधन हो रहा है वह आपको कई योनियों में भटकायेगा । हम आपकी अफवाह से, आपके आरोपों से, आपकी निंदा से तो नहीं डरते लेकिन आप कैसी-कैसी गति में जाओगे वह सोचकर हम डर रहे हैं। आप अपना और अधिक नुकसान न करो । जैसे जीसस क्रॉस पर चढ़ाये जा रहे थे, फिर भी कहते थे : ''हे भगवान ! तू इनको माफ करना...।'' ऐसे ही मैं भी बोलता हूँ कि आप अपने पर दया करो । आप कहाँ जा रहे हो ?

एक-दूसरे की निंदा और आरोपों से मनुष्य मनुष्य का शोषक हो जाता है **(शेष पृष्ठ २१ पर)**

थकने नहीं थकान मिटाने आया हूँ

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

कभी-कभी भाव में आकर दो आँसू बहाता हूँ तो विकृत दिमाग के लोग बोलते हैं : 'बापूजी रो रहे हैं।' मैं रोता नहीं हूँ, भगवान की भक्ति में डोंगरेजी महाराज, मोरारी बापू और अन्य कई संत भी आँसू बहाते हैं अथवा किसीकी तकलीफ याद करके आँखें भले भीग गयी हों लेकिन कायरों की नाईं, मोह-ममता में बँधे हुओं की नाईं अथवा धूर्तों की नाईं रोना हम नहीं जानते। हमारा अंतःकरण, हृदय पत्थर का नहीं है, पिघलने में देर भी नहीं करता है। जो लोग उसको विकृत रूप देकर समाज के आगे रखते हैं उनकी ही छवि खराब होती है।

मेरे भक्त मुझे जानते हैं। किसीने पूछा कि ''बापू ! अब... ?''

मैंने कहा : ''गुरु नानकजी ६० साल के हुए तब निवृत्त होकर एकांत में जाना चाहते थे। मुझे ६० हो गये... ६३ साल की उम्र से मैंने भी ठाना कि हम भी निवृत्त हो जायें। एकांत में जाना है, ईश्वरीय मस्ती में रहना है।''

उन सज्जनों ने कहा : ''बापूजी बोलते हैं, अब मैं थक गया हूँ।''

थक काहे को गया हूँ ? काहे को थकूँगा ? मेरा काम थकने का नहीं है, मेरा काम तो थकान मिटाने का है।

प्रवृत्ति में से जैसे नानकजी थोड़े निवृत्त हो गये, थोड़ा-थोड़ा निवृत्त होकर भगवदीय मस्ती में ज्यादा रहकर सूक्ष्म जगत में काम करने के लिए मैं निवृत्ति चाहता हूँ लेकिन थककर, हारकर, निराश होकर, लाचार होकर भागनेवाला मैं नहीं हूँ। कइयों को भगाकर, पहुँचाकर फिर जाऊँगा, चिंता करने की बात नहीं है। कई आँधियाँ आयेंगी, कई तूफान आयेंगे, क्या-क्या आयेगा और जायेगा लेकिन यह दीया जगमगाता रहेगा।

महात्मा बुद्ध के लिए आँधी-तूफान आये, संत कबीरजी, गुरु नानकजी के लिए आये। कवि गेटे के लिए भी आँधी-तूफान आये लेकिन महापुरुष कहते हैं :

हमें रोक सके ये विघ्नों में दम नहीं।
हमसे विघ्न हैं विघ्नों से हम नहीं ॥

हम हैं तभी विघ्न हैं, विघ्नों से हम नहीं हैं - ऐसा साधक भी जान लें और सेवाकार्य करनेवाले भी जान लें। बापूजी न थके हैं, न हारे हैं, न रोते हैं; बापूजी तो रोनेवालों का रुदन भक्ति में बदलने के लिए, निराशों के जीवन में आशा के दीप जगाने के लिए, लीलाशाह की लीला का प्रसाद बाँटने के लिए आये हैं और बाँटते-बाँटते कइयों को भगवद्रस में छका हुआ देखने को आये हैं। □

सदस्यों व सेवादारों के लिए विशेष सूचना

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक अथवा सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें। पता-परिवर्तन हेतु एक माह पूर्व सूचित करें।

'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के सभी सेवादारों तथा सदस्यों को सूचित किया जाता है कि 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका की सदस्यता के नवीनीकरण के समय पुराना सदस्यता क्रमांक/रसीद क्रमांक एवं सदस्यता 'पुरानी' है - ऐसा लिखना अनिवार्य है। जिसकी रसीद में ये नहीं लिखे होंगे, उस सदस्य को नया सदस्य माना जायेगा।

सत्यमेव जयते

पूर्वकाल में गौतम नाम के एक ऋषि रहते थे, जिनकी परम धार्मिक पत्नी का नाम अहल्या था। दक्षिण दिशा में जो ब्रह्मगिरि है, वहीं उन्होंने दस हजार वर्षों तक तपस्या की थी।

एक समय वहाँ सौ वर्षों तक बड़ा भयानक अकाल पड़ गया। भूतल पर कहीं गीला पत्ता भी नहीं दिखायी देता था। मुनि, मनुष्य, पशु, पक्षी- सब वहाँ से चले गये। तब गौतम ऋषि ने छः महीने तक तप करके वरुणदेव को प्रसन्न किया। वरुणदेव ने प्रकट होकर वर माँगने को कहा। ऋषि ने वृष्टि के लिए प्रार्थना की तो वरुणदेव ने कहा : ''मैं तुम्हारी इच्छा के अनुसार तुम्हें सदा अक्षय रहनेवाला जल देता हूँ। तुम एक गड्ढा तैयार करो।''

गौतम ऋषि ने एक हाथ गहरा गड्ढा खोदा और वरुणदेव ने उसे दिव्य जल से भर दिया तथा परोपकार से सुशोभित होनेवाले गौतम से कहा : ''महामुने ! कभी क्षीण न होनेवाला यह जल तीर्थरूप होगा और पृथ्वी पर तुम्हारे ही नाम से इसकी ख्याति होगी। यहाँ किये हुए दान, होम, तप, देव-पूजन तथा श्राद्ध सभी अक्षय होंगे।''

ऐसा कहकर वरुणदेव अंतर्धान हो गये। उस जल के द्वारा दूसरों का उपकार करके महर्षि गौतम को भी बड़ा संतोष व आत्मिक सुख मिला। महात्मा पुरुष का आश्रय मनुष्यों के लिए महत्त्व की ही प्राप्ति करानेवाला होता है। महान पुरुष ही महात्मा के उस स्वरूप को देखते और समझते हैं, दूसरे अधम मनुष्य नहीं। मनुष्य जैसे पुरुष का सेवन करता है, वैसा ही फल पाता है। महान पुरुष की सेवा से महत्ता मिलती है और हीन की सेवा से हीनता। उत्तम पुरुषों का यही स्वभाव है कि वे दूसरों के दुःख को नहीं सहन कर पाते। अपनेको दुःख प्राप्त हो जाय, इसे स्वीकार कर लेते हैं किंतु दूसरों के दुःख का निवारण ही करते हैं। दयालु, अभिमानशून्य, उपकारी और जितेन्द्रिय- ये पुण्य के चार खंभे हैं, जिनके आधार पर यह पृथ्वी टिकी हुई है।

गौतमजी वहाँ उस परम दुर्लभ जल को पाकर नित्य-नैमित्तिक कर्म करने लगे। मुनीश्वर ने वहाँ नित्य-होम की सिद्धि के लिए धान, जौ और अनेक प्रकार के धान्य बो दिये। वृक्ष और अनेक प्रकार के फल-फूल वहाँ लहलहा उठे। उस अक्षय जल के संयोग से अनावृष्टि वहाँ के लिए दुःखदायिनी नहीं रह गयी। उस वन में अनेक शुभकर्म-परायण ऋषि अपने शिष्यों, भार्या और पुत्र आदि के साथ वास करने लगे। गौतमजी के प्रभाव से वन में सब ओर आनंद छा गया।

गौतम ऋषि के आश्रम में आकर बसे हुए ब्राह्मणों की स्त्रियाँ एक बार जल के प्रसंग को लेकर अहल्या पर नाराज हो गयीं। उन्होंने अपने पतियों को उकसाया। उन लोगों ने गौतम ऋषि का अनिष्ट करने के लिए गणेशजी की आराधना की। भक्तपराधीन गणेशजी ने प्रकट होकर वर माँगने के लिए कहा। तब वे लोग बोले : ''भगवन् ! यदि आप हमें कुछ देना चाहते हैं तो ऐसा कोई उपाय कीजिये, जिससे समस्त ब्राह्मण डाँटकर गौतम को आश्रम से बाहर निकाल दें।''

गणेशजी : ''ब्राह्मणो ! तुमलोग यह उचित कार्य नहीं कर रहे हो। बिना किसी अपराध के

उन पर क्रोध करने से तुम्हारी ही हानि होगी। जिन्होंने पहले उपकार किया हो, उन्हें यदि दुःख दिया जाय तो वह अपने लिए हितकारक नहीं होता। उपकारी को दुःख देना, उपकारी के प्रति विद्रोह करना, उपकारी की निंदा करना अपने ही पुण्य, मति-गति को विनाश के रास्ते लगाना है। इससे इस जगत में अपना ही नाश होता है।

पहले जब तुमलोगों को दुःख भोगना पड़ा था, तब महर्षि गौतम ने जल की व्यवस्था करके तुम्हारा हित किया और तुम उनका अहित चाह रहे हो। इस पर तुम सब लोग विचार कर लो। स्त्रियों की शक्ति से मोहित हुए तुमलोग यदि मेरी बात नहीं मानोगे तो तुम्हारा यह बर्ताव गौतम के लिए हितकारक ही होगा, इसमें संशय नहीं है। ये मुनिश्रेष्ठ गौतम निश्चय ही तुम्हें पुनः सुख देंगे। इसलिए तुमलोग कोई दूसरा वर माँगो।''

किंतु ब्राह्मणों ने गणेशजी की बात स्वीकार नहीं की। तब भक्तों के अधीन होने के कारण उन शिवकुमार ने कहा : ''तुमलोगों ने जिसके लिए प्रार्थना की है, उसे मैं अवश्य करूँगा। पीछे जो होनहार होगी, वह होकर ही रहेगी।'' ऐसा कहकर वे अंतर्धान हो गये।

उसके बाद उन दुष्ट ब्राह्मणों को प्राप्त हुए वर के कारण गणेशजी गौतम ऋषि के खेत में एक दुर्बल गाय बनकर गये। वह गौ काँपती हुई धान, जौ चरने लगी। उसी समय दैववश गौतमजी वहाँ आ गये। वे दयालु ठहरे, इसलिए मुट्ठी भर तिनके लेकर उन्हींसे उस गौ को हाँकने लगे। उन तिनकों का स्पर्श होते ही वह गौ पृथ्वी पर गिर पड़ी और ऋषि के देखते-देखते उसी क्षण मर गयी।

द्वेषी ब्राह्मण और उनकी दुष्ट स्त्रियाँ वहाँ छिपे हुए सब कुछ देख रहे थे। उस गौ के गिरते ही वे सब-के-सब बोल उठे : ''गौतम ने यह क्या कर डाला !'' गौतम भी आश्चर्यचकित हो अहल्या को बुलाकर व्यथित हृदय से दुःखपूर्वक बोले : ''देवी ! यह क्या हुआ, कैसे हुआ ? जान पड़ता है परमेश्वर मुझ पर कुपित हो गये हैं। अब क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मुझे गौहत्या का पाप लगा है।''

ब्राह्मण और उनकी पत्नियाँ गौतम ऋषि को डाँटने और दुर्वचनों द्वारा अहल्या को पीड़ित करने लगे। उनके दुर्बुद्धि शिष्य और पुत्र भी गौतम ऋषि को बारम्बार फटकारने और धिक्कारने लगे।

ब्राह्मण : ''अब तुम्हें अपना मुँह नहीं दिखाना चाहिए। गौ-हत्यारे का मुँह देखने पर तत्काल वस्त्रसहित स्नान करना चाहिए। जब तक तुम इस आश्रम में रहोगे, तब तक अग्निदेव और पितर हमारे दिये हुए किसी भी हव्य-कव्य को ग्रहण नहीं करेंगे। इसलिए पापी गौ-हत्यारे ! तुम परिवारसहित यहाँ से अन्यत्र चले जाओ। विलम्ब न करो।''

ऐसा कहकर उन सभीने उन्हें पत्थरों से मारना आरम्भ किया। उन दुष्टों के मारने और धमकाने पर गौतम ऋषि बोले : ''मैं यहाँ से अन्यत्र जाकर रहूँगा।'' फिर गौतम ऋषि ने उन सबकी आज्ञा से एक कोस दूर जाकर अपने लिए आश्रम बनाया। वहाँ भी जाकर उन ब्राह्मणों ने कहा : ''जब तक तुम्हारे ऊपर गौहत्या का दोष लगा है, तब तक तुम्हें कोई यज्ञ-यागादि कर्म नहीं करना चाहिए। किसी भी वैदिक देवयज्ञ या पितृयज्ञ के अनुष्ठान का तुम्हें अधिकार नहीं रह गया है।''

मुनिवर गौतम उनके कथनानुसार किसी तरह एक पक्ष बिताकर बारम्बार उन ब्राह्मणों से अपनी शुद्धि के लिए दीनभाव से प्रार्थना करने लगे। तब ब्राह्मणों ने कहा : ''गौतम ! तुम अपने पाप को प्रकट करते हुए तीन बार सारी पृथ्वी की परिक्रमा करो, फिर लौटकर यहाँ एक महीने

तक व्रत करो । उसके बाद इस ब्रह्मगिरि की एक सौ एक परिक्रमा करने के पश्चात् तुम्हारी शुद्धि होगी अथवा गंगाजी को यहाँ लाकर स्नान करो तथा एक करोड़ पार्थिव लिंग बनाकर महादेवजी की आराधना करो । फिर गंगा में स्नान करके इस पर्वत की ग्यारह बार परिक्रमा करो । तत्पश्चात् सौ घड़ों के जल से पार्थिव शिवलिंग को स्नान कराने पर तुम्हारा उद्धार होगा ।''

गौतम ऋषि ने 'बहुत अच्छा' कहकर उनकी बात मान ली। मुनिश्रेष्ठ ने उस पर्वत की परिक्रमा की, पार्थिव लिंगों का निर्माण करके उनका पूजन किया । साध्वी अहल्या ने भी साथ रहकर वह सब कुछ किया । शिष्य उन दोनों की सेवा करते थे।

पत्नीसहित गौतम ऋषि के आराधना करने से संतुष्ट हुए भगवान शिव वहाँ शिवा और प्रमथगणों के साथ प्रकट हुए। शंकरजी ने कहा : ''महामुने ! मैं तुम्हारी उत्तम भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। तुम कोई वर माँगो ।''

गौतम ऋषि शंभु के सुंदर रूप को देखकर आनंदित हुए, भक्तिभाव से उनकी स्तुति की और बोले : ''देव ! मुझे निष्पाप कर दीजिये ।''

भगवान शिव : ''मुने ! तुम धन्य हो, कृतकृत्य हो और सदा ही निष्पाप हो । उन दुष्टों ने तुम्हारे साथ छल किया है । जगत के लोग तुम्हारे दर्शन से पापरहित हो जाते हैं । फिर सदा मेरी भक्ति में तत्पर रहनेवाले तुम क्या पापी हो ? मुने ! जिन दुरात्माओं ने तुम पर अत्याचार किया है, वे ही पापी, दुराचारी और हत्यारे हैं। उनके दर्शन से दूसरे लोग पापिष्ठ हो जायेंगे । वे सभी कृतघ्न हैं । उनका कभी उद्धार नहीं हो सकता ।''

महादेवजी की बात सुनकर महर्षि गौतम मन-ही-मन बड़े विस्मित हुए । बोले : ''महेश्वर ! उन ब्राह्मणों ने तो मेरा बहुत बड़ा उपकार किया । यदि उन्होंने यह बर्ताव न किया होता तो मुझे आपके दर्शन कैसे होते ? धन्य हैं वे ब्राह्मण, जिन्होंने मेरे लिए परम कल्याणकारी कार्य किया है । उनके इस दुराचार से ही मेरा महान स्वार्थ सिद्ध हुआ है।''

गौतमजी की यह बात सुन के महेश्वर बड़े प्रसन्न होकर बोले : ''विप्रवर ! तुम धन्य हो, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ। वर माँगो ।''

''नाथ ! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे गंगा प्रदान कीजिये और ऐसा करके लोक का महान उपकार कीजिये । आपको मेरा नमस्कार है ।''

विवाह में ब्रह्माजी के दिये हुए जल में से जो कुछ शेष रह गया था, वह जल भक्तवत्सल शंभु ने उन गौतम मुनि को दे दिया । उस समय गंगाजी का जल परम सुंदर स्त्री का रूप धारण करके वहाँ प्रकट हुआ। मुनिवर गौतम ने गंगाजी की स्तुति करके उन्हें नमस्कार किया ।

गौतम बोले : ''गंगे ! तुम धन्य हो, तुमने सम्पूर्ण भुवन को पवित्र किया है। इसलिए निश्चित रूप से मुझ गौतम को पवित्र करो ।''

शिवजी : ''देवी ! तुम मुनि को पवित्र करो और तुरंत वापस न जाकर वैवस्वत मनु के अट्ठाईसवें कलियुग तक यहीं रहो ।''

गंगाजी : ''महेश्वर ! यदि मेरा माहात्म्य सब नदियों से अधिक हो और माँ पार्वती तथा गणों के साथ आप भी यहाँ रहें, तभी मैं इस धरातल पर रहूँगी ।''

भगवान शिव : ''गंगे ! मैं तुम्हारे कथनानुसार यहाँ स्थित रहूँगा ।''

इस प्रकार महर्षि गौतम के प्रार्थना करने पर भगवान शंकरजी और गंगाजी दोनों वहाँ स्थित हो गये। वहाँ की गंगा 'गौतमी' (गोदावरी) नाम से विख्यात हुई और भगवान शिव का ज्योतिर्मय लिंग 'त्र्यम्बक' कहलाया । ❐

फासले दिल से हटा दो

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते ।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दुर्भिक्षो मरणं भयम् ॥

'अपूजनीय व्यक्तियों का जहाँ आदर, सम्मान, पूजा होती है और पूजनीय व्यक्तियों का जहाँ पूजन नहीं किया जाता, वहाँ दुर्भिक्ष, मृत्यु और भय - ये तीनों संकट अवश्य आते हैं ।'

(स्कंद पुराण, माहेश्वर - केदार खंड : ३.४८-४९)

सरमद नाम के एक सूफी फकीर थे । उनके खिलाफ मुल्लाओं की फरियादों के कारण एक बार औरंगजेब ने हुक्म चलाया कि जुम्मे के दिन सरमद फकीर नमाज अदा करने के लिए जामा मसजिद में हाजिर हो जायें । जुम्मे के दिन इमाम ने नमाज शुरू की तो औरंगजेब ने भी घुटने टेके, सिजदा किया लेकिन सरमद फकीर ज्यों-के-त्यों खड़े रहे और इनकी नमाज देखकर चल दिये । जाते-जाते सुनाते गये : ''इमाम का खुदा सरमद के पैरों तले दबा है ।''

मुल्ला-मौलवियों ने औरंगजेब को भड़काया तो हुक्म हुआ कि 'सरमद जहाँ हो पकड़ लाओ और उसका सिर काट दो ।' सरमद फकीर का सिर कटवा दिया गया । जब सिर लुढ़कते हुए यमुना की तरफ बढ़ने लगा तब एक फकीर ने प्रार्थना की : ''औरंगजेब ने नासमझी से आपका अनादर किया है । हे फकीर ! आप रहमत करो । आपके खून की एक बूँद भी अगर यमुनाजी में गिर गयी तो कुदरत का कोप हो जायेगा और दिल्ली डूब जायेगी । कई बेगुनाह लोग भी तड़प-तड़पकर मर जायेंगे ।''

सिर रुक गया । औरंगजेब को ताज्जुब हुआ। सारे भड़कानेवाले नहीं होते हैं, कुछ समझदार भी होते हैं । किसीने औरंगजेब को समझाया : ''जहाँपनाह ! हमलोग सरमद फकीर को पहचानने में धोखा खा गये । ऊँची पहुँच के फकीर थे वे । उन्होंने इसलाम की तौहीन की - यह बात हम समझ नहीं पा रहे हैं । उन्होंने कहा था कि 'इमाम का खुदा सरमद के पैरों तले दबा है' तो इस बात की जाँच की जाय ।''

जहाँ सरमद फकीर खड़े थे वहाँ खुदाई की गयी तो वहाँ से गड़ा हुआ धन मिला । इमाम से पूछा गया कि ''तुम नमाज पढ़ रहे थे तो क्या चिंतन कर रहे थे ?''

उसने कहा : ''मन में था कि बेटी बड़ी हो गयी है, हाथ रँगने हैं । जहाँपनाह आये हैं, कुछ संपत्ति मिल जाय । सम्पदा का चिंतन था तो वही खुदा था मेरा । सरमद फकीर ने ठीक कहा था ।''

इसलाम में भी सरमद फकीर जैसे कई महापुरुष हो गये, जो सबमें एक अल्लाह देखते थे । हिन्दू को काफिर नहीं कहते थे । हिन्दू भी अपनी ही जिगरी जान है । जो मुसलमान की आत्मा है, वही हिन्दू की है । मुसलमान अल्लाह कहते हैं तो हिन्दू राम, शिव कहते हैं ।

तुझमें राम, मुझमें राम सबमें राम समाया है ।

जो रोम-रोम को सत्ता देता है उसीको हम 'राम' कहते हैं ।

'सैफी कॉलेज, सिद्धपुर' में मेरा सत्संग था । मुसलमान विद्यार्थी थे । मैं तो सत्संग में कहता कि ''जय रामजी की बोलना पड़ेगा ।'' लेकिन विद्यार्थी नहीं बोलते थे, सकुचाते थे ।

वहाँ के प्रधानाचार्य ने मुझसे कहा कि ''बापूजी ! ये विद्यार्थी मुसलमान हैं ।''

तो मैंने सत्संग में समझाया : ''बेटा ! 'राम' अर्थात् जो रोम-रोम में रमा है, जो चेतन है, जिसकी सत्ता से हाथ उठता है, आँख देखती है ।''

फिर तो मैं कहूँ उसके पहले विद्यार्थी 'जय रामजी की', 'जय रामजी की' कहने लगे ।

किसी मत, पंथ, मजहब से मेरा कोई विरोध नहीं है ।

तुम सभीके सब तुम्हारे, फासले दिल से हटा दो ।
तुझमें राम मुझमें राम, सबमें राम समाया है।
फिर भी ना जाने किस मूरख ने
लड़ना हमें सिखाया है।

सबको शांति चाहिए, आरोग्य चाहिए, प्रसन्नता चाहिए । सबका उद्देश्य यही है । फकीर या संत किसी मजहब विशेष के नहीं होते । जैसे सूर्य सबका, चाँद सबका ऐसे ही फकीर, संत सभीके होते हैं । ☐

सबको प्रेम की मधुरता और सहानुभूति भरी आँखों से देखो । सुखी जीवन के लिए विशुद्ध निःस्वार्थ प्रेम ही असली खुराक है । संसार इसीकी भूख से मर रहा है, अतः प्रेम का वितरण करो । अपने हृदय के आत्मिक प्रेम को हृदय में ही मत छिपा रखो । उदारता के साथ प्रेम बाँटो । जगत का बहुत-सा दुःख दूर हो जायेगा ।

जिसके बर्ताव में प्रेमयुक्त सहानुभूति नहीं है वह मनुष्य जगत में भाररूप है और जिसके हृदय में स्वार्थयुक्त द्वेष है वह तो जगत के लिए अभिशापरूप है ।

हृदय में विशुद्ध प्रेम को जगाओ, उसे बढ़ाओ । सब ओर उसका प्रवाह बहा दो । तुम्हें अलौकिक सुख-शांति मिलेगी और तुम्हारे निमित्त से जगत में भी सुख-शांति का प्रवाह बहने लगेगा ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'मधुर व्यवहार' से)

पाया कहे सो बाँवरा...

(पूज्य बापूजी के सत्संग-प्रवचन से)

आज सुबह मैं कई लोगों से मिला, कई लोग मुझसे मिले, फिर भी मैं कभी किसीसे मिला नहीं, बिछड़ा भी नहीं । तो बताओ, यह कैसा है जादू ? तुम कहोगे : 'बापूजी ! आप कल मिले थे, फिर शाम को चले गये, बिछड़ गये । अभी फिर मिले हो । हम सच कहते हैं ।'

काल्पनिक जगत में तुम सच कहते हो लेकिन तुम्हारा कहना सत् नहीं है। सत् तीनों कालों में एकरस होता है और सच अपनी-अपनी कल्पनाओं के अनुरूप होता है । हर देश का अपना-अपना कानून होता है। 'यह कानून सच्चा है - मेरे देश का है, वह सच्चा है - हमारे देश का है'- ऐसा नहीं चलता । अमेरिका में दाहिनी ड्राइविंग चलती है और यहाँ बायीं। अमेरिका का कानून अलग है । वहाँ के लिए वह सच है, यहाँ के लिए यह सच है । सच तो बदलता रहता है लेकिन अमेरिकन की धड़कन जिससे चलती है वह सत् है और उसी सच्चिदानंद की सत्ता से हिन्दुस्तानी की धड़कन चलती है । अमेरिकन यह करते हैं, वह करते हैं यह सत् नहीं है, सच है लेकिन हिन्दुस्तानी का आत्मा, अमेरिकनों का आत्मा सत् है । सत् सबका एकरस तथा सच और भावनाएँ सबकी अलग-अलग होती हैं ।

हम कभी किसीसे मिलते नहीं। मिलता वही है जो पहले नहीं था अथवा बिछड़ा हुआ था। जो पहले नहीं होता है और मिलता है, वह बिछड़ता है लेकिन जो पहले था, अभी है, बाद में रहेगा उस आत्मा को 'मैं' रूप में जान लिया तो तुम कभी किसीसे बिछड़ नहीं सकते और किसीको मिल भी नहीं सकते। आकाश किसीसे मिलता नहीं है क्योंकि किसीसे बिछड़ा ही नहीं और किसीसे बिछड़ता नहीं है क्योंकि किसीसे मिला ही नहीं। कोई मर जाय तो आकाश नहीं मरेगा, कोई पैदा हो जाय तो आकाश पैदा नहीं होगा। उसके जन्मने के पहले आकाश था, जी रहा है तब भी है और मर जायेगा तब भी रहेगा। ऐसे ही 'मैं आकाश से भी सूक्ष्म चिदाकाशस्वरूप आत्मा हूँ'- ऐसा जो जान लेता है उसकी सारी भ्रांतियाँ दूर हो जाती हैं।

हम बोलते हैं : 'भगवान न जाने कब सुनेगा हमारी प्रार्थना...' तो अभी यह बोलने की सत्ता भी उसीसे आ रही है। वह क्या नहीं देखता है, क्या नहीं जानता है ? यह वहम है कि हम इतना जप करेंगे फिर मिलेगा, इतना व्रत करेंगे फिर मिलेगा। मिला हुआ है, वह हमसे बिछड़ ही नहीं सकता लेकिन हम शरीर को 'मैं' मानते हैं और संसारी चीजें पाकर सुखी होना चाहते हैं, इसलिए वह मिला हुआ होते हुए भी बिछड़ा हुआ लगता है और संसार बिछड़ रहा है फिर भी मिला हुआ लगता है।

शरीर बिछड़ रहा है। बचपन बिछड़ गया कि नहीं बिछड़ा ? बचपनवाले शरीर के कण अभी नहीं हैं लेकिन परमात्मा तो वही-का-वही है। बचपन को जाननेवाला चैतन्य आत्मा तो वही-का-वही है। उस परमात्मा को पाये बिना कुछ भी पा लिया तो टिकेगा नहीं और कुछ समय के लिए टिक भी गया तो पूर्ण सुख नहीं देगा। 'मैं तो खुश हूँ, मुझे पत्नी मिल गयी...' पूरा सुखी नहीं रहेगा, थोड़े दिन के लिए भले ही खुशी मना ले। 'मेरा पति बहुत बढ़िया है, हम बहुत खुश हैं...' लेकिन कब तक ? समय बरबाद हो जायेगा इसमें। **ईश्वर के सिवाय कहीं भी मन लगाया तो अंत में रोना ही पड़ेगा।** अरे, वर्तमान में भी रोना पड़ेगा, अंत में क्या ! ईश्वर ही सत् है और वही वास्तव में परम सुखस्वरूप है। उसमें मन लगाओ। ईश्वर मिलता नहीं, बिछड़ता नहीं तो मन कैसे लगायें ?

अरे बाबा ! मिलता नहीं, बिछड़ता नहीं यह समझकर मन विश्रांति पा लेगा उसमें। अपने-आप मन की दौड़, मन की वासनाएँ शांत होंगी। जैसे लहर पर लहर उठती रहे, तरंग पर तरंग बनती रहे तो पानी की गहराई नहीं दिखती। तरंगें शांत हो जाती हैं तो पानी की गहराई दिखती है। ऐसे ही जब हम शांत होते हैं तब ईश्वरत्व का एहसास होता है।

सुन्या सखना कोई नहीं सबके भीतर लाल।
मूरख ग्रंथि खोले नहीं कर्मी भयो कंगाल ॥

बेवकूफ वह गाँठ खोलता नहीं है और जिसे अक्ल है वह भी संसार की बातों में उलझकर कंगाल ही रह जाता है।

मुझे आसारामजी महाराज से मिलना हो तो इंतजार नहीं करना पड़ेगा। उनसे मैं कभी मिलता ही नहीं और बिछड़ता भी नहीं क्योंकि वह मैं ही हूँ। ऐसे ही ईश्वर को, आत्मा को जान लोगे तो सारी बेवकूफी चली जायेगी। इतना सरल है !

पाया कहे सो बाँवरा, खोया कहे सो कूर।
पाया खोया कुछ नहीं, ज्यों-का-त्यों भरपूर ॥

यह है ब्राह्मी स्थिति ! अपने शुद्ध 'मैं' को जानकर सभी दुःखों से, सभी कष्टों से मुक्त ! इसे प्राप्त करने से नित्य नवीन रस, परमात्म-रस, परमात्म-प्रकाश, परमात्म-आनंद सहज सुलभ हो जायेगा। ❐

अलख पुरुष की आरसी

संत कबीरजी से किसीने कहा : ''हम निर्गुण, निराकार परमात्मा को तो देख नहीं पाते, फिर भी देखे बिना रह न जायें ऐसा कोई उपाय बताइये ।''

कबीरजी ने कहा : ''परमात्मा को देखने के लिए ये चमड़े की आँखें काम नहीं आतीं । इसलिए इन आँखों से तो परमात्मा नहीं दिखेगा परंतु यदि तुम देखना ही चाहते हो तो जिनके हृदय में आत्मस्वरूपाकार वृत्ति प्रकट हुई है, जिनके हृदय में समतारूपी परमात्मा प्रकट हुआ है, अद्वैत ज्ञानरूपी परमात्मा प्रकट हुआ है ऐसे किन्हीं महापुरुष को तुम देख सकते हो । जिन्हें देखकर तुम्हें परमात्मा याद आ जायें, जिस दिल में ईश्वर निरावरण हुआ है, उन संत-महापुरुष को देख सकते हो ।

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह ।
लखा जो चाहे अलख को इन्हीं में तू लख लेह ॥''

साधु की देह एक ऐसा दर्पण है जिसमें तुम उस अलख पुरुष परमात्मा के दर्शन कर सकते हो । इसलिए अलख पुरुष को देखना चाहते हो तो ऐसे किन्हीं परमात्मा के प्यारे संत के दर्शन करने चाहिए ।

शुद्ध हृदय से, ईमानदारी से उन महापुरुष के गुणों का चिंतन करके हृदय को धन्यवाद से भरते जाओगे तो तुम्हारे हृदय में उस परमात्मा को प्रकट होने में देर न लगेगी । परमात्मा को पाना इतना सरल होते हुए भी लोग इसका फायदा तो ले नहीं पाते वरन् उनका बाह्य व्यवहार देखकर अपनी क्षुद्र मति से उनको नापते रहते हैं और अपना ही नुकसान करते हैं ।

वसिष्ठजी महाराज इस विषय में कहते हैं : ''हे रामजी ! शास्त्रकर्ता का और लक्षण न विचारना पर शास्त्र की युक्ति को विचारना है । अज्ञानी जो कुछ मुझे कहते और हँसते हैं, सो सब मैं जानता हूँ परंतु मेरा दया का स्वभाव है, इससे मैं चाहता हूँ कि किसी प्रकार वे नरकरूप संसार से निकलें । इसी कारण मैं उपदेश करता हूँ ।''

अयोध्या नरेश दशरथ जिनके चरणों में अपना सिर झुकाकर अपनेको सौभाग्यशाली मानते हैं और श्रीराम जिनके शिष्य हैं, ऐसे गुरु वसिष्ठजी को भी कहनेवालों ने क्या-क्या नहीं कहा होगा ? तो तुम्हारे लिए भी कोई कुछ कह दे तो चिंता मत करना वरन् उसे दुआएँ देना ।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने भारत का राष्ट्रपति पद ग्रहण किया तो किसी विकृत मनवाले ने एक सस्ते अखबार में उनके बारे में छापना शुरू कर दिया कि 'ये तो ऐसे हैं... वैसे हैं...' आदि जो कुछ कचरा उसके दिमाग से निकलता था उसे कलम के द्वारा अखबार में छापता था और कोई लेना नहीं चाहता तो उसे जबरदस्ती अखबार पकड़ा देता था। डॉ. राजेन्द्रबाबू के किसी चाहक ने वह अखबार राजेन्द्रबाबू को दिखाया तब उन्होंने वह फाड़कर फेंक दिया । दूसरा कोई लेकर आया तो उस अखबार को कचरा पेटी में डाल दिया । कुछ दिनों तक ऐसा चलता रहा । आखिर किसीने कहा : ''वह आप जैसे व्यक्ति के लिए इतना-इतना लिख रहा है और आप कुछ करते तक नहीं ! अब तो आप राष्ट्रपति हैं । आपके पास क्या नहीं है ? अब आप चाहें तो उसके खिलाफ चाहे जो कर सकते हैं ।''

राजेन्द्रबाबू मुस्कराये और कहा : ''मेरी बराबरी का होता तो मैं उसे जवाब देता पर मुझे पता है कि वह मेरे लायक नहीं है। मैं उसे जवाब क्यों दूँ ? जो विकृत मनवाले होते हैं उनको शत्रुओं की कमी नहीं होती। कभी उनकी मति ही ऐसी हो जायेगी कि उन्हें दूसरा कोई शत्रु मिल जायेगा और वे आपस में ही लड़ मरेंगे - लोहे से लोहा कट जायेगा।''

ऐसे लोग अपनी हलकी मति से दूसरों को सताकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहते हैं। राजेन्द्रबाबू पर इसका कोई असर नहीं पड़ा लेकिन उनके परिचित और मित्र तो परेशान हो गये। वे कहने लगे : ''हम आपके पास आते-जाते हैं और आपकी बदनामी हो रही है तो हमारे रिश्ते-नातों पर भी इसका असर पड़ रहा है। हमें लोग ऐसा-वैसा सुनाते हैं, अतः आपको कुछ तो करना ही चाहिए।''

तब राजेन्द्रबाबू ने एक दृष्टांत सुनाया : ''एक हाथी जा रहा था। उसके पीछे कुत्ते भौंकने लगे किंतु हाथी अपनी ही मस्ती में चलता रहा। हाथी अगर कुत्तों को समझाने, डाँटने या चुप कराने लगे तो इसका मतलब यह है कि वह कुत्तों की बराबरी कर रहा है, वह अपनी मस्ती भूल गया है, अपनी गरिमा भूल गया है। हाथी की महिमा अपने ढंग की है। हाथी से हाथी टकरा जाय तो बात अलग है।''

संत कबीरजी ने कहा है :

हाथी चलत है अपनी चाल में।
कुतिया भौंके वा को भौंकन दे।
मन तू राम सुमिर, जग लड़वा दे।

ऐसे ही अपनी महिमा में मस्त रहनेवाले संतों-महापुरुषों पर लोगों की अच्छी-बुरी बातों का कोई असर नहीं पड़ता है परंतु जो संतों का आदर, पूजन, सेवा करता है वह अपना भाग्य उज्ज्वल बनाता है और जो उनकी निंदा करता है वह अपने भाग्य को अंधकार में डालता है। संतों की नजर में कोई अच्छा-बुरा नहीं होता है। संतों की नजर में तो बस, केवल वही होता है- **एकमेवाद्वितीयोऽहम्।**

जिसकी जैसी भावना, जिसकी जैसी दृष्टि और जिसका जैसा प्रेम, वैसा ही उसको लाभ या हानि होती है।

करमी आपो आपनी के नेड़ै के दूरि।

अपनी ही करनी से, अपने ही भावों से आप स्वयं को अपने गुरु के, संत के नजदीक अनुभव करते हो और अपने ही भावों से दूरी का अनुभव करते हो। संत के हृदय में अपना-पराया कुछ नहीं होता है लेकिन आजकल का कलियुग का अल्प मतिवाला आदमी गलत बात तो बहुत जल्दी स्वीकार कर लेगा, अच्छी बात को स्वीकार नहीं करेगा। सच्चाई फैलाने में तो जीवन पूरा हो जाता है परंतु कुछ अफवाह फैलानी है तो फटाफट फैल जाती है। जो लोग तुरंत कुप्रचार के शिकार बन जाते हैं वे अल्प मतिवाले हैं, उनकी विचारशक्ति कुंठित हो गयी है।

गुजरात में नरसिंह मेहता नाम के प्रसिद्ध संत हो चुके हैं। उनके लिए भी ईर्ष्यालु लोगों ने कई बार अफवाहें फैलायी थीं, गलत बातों का खूब प्रचार किया था लेकिन अफवाहें फैलानेवाले कौन-से नरक में गये होंगे, किस माता के गर्भ में लटकते होंगे यह हम और तुम नहीं जानते परंतु नरसिंह मेहता को तो आज भी सभी लोग जानते हैं, आदर से उनका नाम लेते हैं।

नरसिंह मेहता श्रीकृष्ण के भक्त थे। वे प्रभु-पद गाते-गाते इतने भावविभोर हो जाते थे कि अपने-आपको भूल जाते। नरसिंह मेहता श्रीकृष्ण का चिंतन करते-करते इतने तन्मय हो जाते थे कि जो लोग उनके दर्शन करने के लिए आते थे वे

धन्य-धन्य हो जाते थे, कृतार्थ हो जाते थे। वे लोग भी नरसिंह मेहता के साथ नाच लेते थे, झूम लेते थे, कृष्ण-कन्हैया के भाव में आ जाते थे।

ऐसे नरसिंह मेहता के बारे में जब अफवाहें गलत साबित हुईं, जब लोगों को पता चला कि नरसिंह मेहता की दृढ़ भक्ति के कारण चमत्कार होते हैं तो चमत्कार के प्यारे उनके आस-पास इकट्ठे होते रहते थे। वे चमत्कार के भक्त थे, नरसिंह मेहता के भक्त नहीं थे।

ऐसा कई संतों के साथ होता है। जब तक सब ठीक लगता है तब तक तो लोग संत के साथ होते हैं, अपनेको संत का भक्त कहलाते हैं किंतु जरा-सी कुछ दिक्कत लगी कि खिसक जाते हैं। ऐसे लोग सुविधा के भक्त होते हैं, संत के भक्त नहीं होते। संत का भक्त वही है कि कितनी भी विपरीत परिस्थिति आ जाय किंतु उसका भक्तिभाव नहीं छूटता। सुविधा के भक्त तो कब उलझ जायें, कब भाग जायें पता नहीं। जो निःस्वार्थ भक्त होते हैं वे अडिग रहते हैं, कभी फरियाद नहीं करते। वे तो संत के दर्शन, सत्संग से और उनकी महिमा का गुणगान करके आनंदित, उल्लसित, रोमांचित होते हैं। किसीकी निंदा या विरोध से संत को कोई हानि नहीं होती और किसीके द्वारा प्रशंसा करने से वे बड़े नहीं हो जाते।

सच्चे संतों का आदर-पूजन जिनसे नहीं सहा गया, ऐसे ईर्ष्यालु लोगों ने ही जोर-शोर से कुप्रचार किया है। संतों के व्यवहार को पाखंड बताकर मानों उन्होंने ही धर्म के प्रचार का ठेका उठाया है। ऐसे लोगों को पता ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। जब कबीरजी आये तब पंडों ने कहा : 'हम धर्म की जय कर रहे हैं।' जब सुकरात आये तब राजा तथा अन्य लोगों ने कहा : 'हम धर्म की जय कर रहे हैं।' नानकजी आये तब विरोधियों ने विद्रोह किया। नानकजी पर इतना अत्याचार किया कि उन्हें कारागृह में जाना पड़ा। कबीरजी पर भी जुल्म किये गये।

पिछले दो हजार वर्षों में जो धर्म-पंथ हुए हैं, उन्होंने हिन्दू धर्म की गरिमा को न जानकर ऐसी-ऐसी साजिशें कीं कि हिन्दू हाथे बन गये साजिश के और आपस में लड़-भिड़े। अपने ही लोग संतों की निंदा करके हिन्दू संस्कृति को क्षीण करने का जघन्य अपराध करते आ रहे हैं। लेकिन चाहे कैसी भी मुसीबतें आयीं, कितनी ही विपरीत परिस्थितियाँ आयीं किंतु जो सच्चे भक्त थे, श्रद्धालु थे, उन लोगों ने सच्चे संतों की शरण नहीं छोड़ी और दैवी कार्य नहीं छोड़ा। निंदा की दलदल में फँसे नहीं, कुप्रचार के आँधी-तूफानों में पतझड़ की नाईं गिरे नहीं; डटे रहे, धनभागी हुए। संत कबीरजी के साथ सलुका-मलुका, गुरु नानकजी के साथ बाला-मरदाना ऐसे श्रद्धालु शिष्य थे, जिनके नाम इतिहास में अमर हो गये।

धन्य हैं वे शिष्य, जो अलख पुरुष की आरसी स्वरूप ब्रह्मवेत्ता संतों को श्रद्धा-भक्ति से देखते हैं और उनसे आखिरी दम तक निभा पाते हैं। जो निंदा या कुप्रचार के शिकार बनकर अपनी शांति का घात नहीं करते वे बड़भागी हैं। उन्हींको यह फलता है :

अलख पुरुष की आरसी साधु का ही देह।
लखा जो चाहे अलख को
इन्हीं में तू लख लेह ॥ ☐

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहम् ।
मदन्यत् ते न जानन्ति नाहं तेभ्यो मनागपि ॥

'साधु मेरे हृदय हैं और मैं साधुओं का हृदय हूँ। वे मेरे सिवा और कुछ नहीं जानते और मैं उनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं जानता।' **(श्रीमद्भागवत : ९.४.६८)**

अविकंप योग

(पूज्यश्री के सत्संग से)

दो प्रकार का योग होता है - कंपित योग और अविकंप योग। नियम करते समय आनंद आता है, नियम छोड़ दिया तो आनंद चला गया। चिंतन करते-करते आप शांत हो गये, समाधिस्थ हो गये- बहुत अच्छी बात है लेकिन समाधि सदा नहीं रहेगी। ध्यान से उठना तो पड़ेगा। फिर जगत ऐसा-वैसा दिखेगा तो आपका योग कंपित हो जायेगा।

जगत दिखे लेकिन जगत की गहराई में भगवान की स्मृति लाओ, ज्ञान लाओ। इसे कहते हैं अविकंप योग - वह योग जो कंपित नहीं होता। हम अकेले में हैं, ध्यान-भजन में हैं तो आनंद है लेकिन भीड़ में इधर रहते हैं तो भी अशांत काहे को होना ? भीड़ में रहते हैं फिर भी आनंद है। उसीके (परमात्मा के) निमित्त लेते, देते, करते हैं, सब वही है। जैसे मिठाई के बाहर भी शक्कर की मिठास और भीतर भी शक्कर की मिठास, ऐसे जो कुछ दिखे उसमें सच्चिदानंद की स्मृति। जल दिखा तो उसमें रस परमात्मा का - **रसोऽहमप्सु कौन्तेय**। प्रभा दिखे तो **प्रभास्मि शशिसूर्ययोः** - चाँद और सूरज के प्रकाशरूप में परमात्मा। **प्रणवः सर्ववेदेषु**- वेदों में ॐकार मैं हूँ। **शब्दः खे पौरुषं नृषु**- आकाश में शब्द और पुरुषों में जो पुरुषत्व है वह मैं हूँ। इस प्रकार ज्ञानयोग में आ जायें। ध्यानयोगवाला भगवद्ज्ञान की स्मृति में आ जाय, ध्यानवाला ज्ञान में आ जाय। जैसे मिठाई में शक्कर, वस्तु-व्यक्तियों के भीतर आकाश तत्त्व, ऐसे ही सर्वत्र चिदाकाश।

एक महात्मा थे। वे बड़ी ऊँची कमाई के धनी थे। १२-१२ साल गंगोत्री की एकांत गुफा में तप करते थे। गंगोत्री इलाके के दूर-दूर के गाँववाले दर्शन करने जाते थे। श्रद्धा बढ़ी तो लोगों ने कहा : ''बाबा ! बच्चे तो बाप के पास आते हैं, पिता को भी कभी बच्चों के पास आना चाहिए। दया करो, दर्शन देने को आओ।''

सभीके संकल्प बढ़ गये और बाबाजी को आ गयी दया, बोले : ''चलो चलते हैं।'' तिथि निश्चित हो गयी। गाँववालों ने उत्सव रखा कि फलानी तिथि को महाराज पधारेंगे, उनके दर्शन होंगे। आस-पास के गाँववाले भी इकट्ठे हुए।

श्रद्धा-भक्तिवाले भक्तों की भीड़ में कुछ भगतड़े भी होते हैं, बेवकूफ लोग भी होते हैं। धक्का-धक्की में महाराज के नजदीक आये तो किसीका पैर महाराज के पैर पर पड़ गया। महाराज लकड़ी की खड़ाऊँ पहनते थे और उसने जूता पहना था। महाराज क्रोधित हुए, फिर सँभल गये। वे बोले : ''अब हम गाँव में नहीं आयेंगे। अभी हमारी साधना कच्ची है, बाद में आयेंगे।''

पहाड़ियों के जो बुजुर्ग लोग थे उन्होंने कहा : ''बाबा ! साधना पक्की करने के लिए फिर गुफा में जाओगे ? जहाँ आपको कोई विक्षेप नहीं हो, कोई कंपन नहीं हो वहाँ तो आपका अविकंप योग हो जायेगा लेकिन जहाँ विक्षेप हो, हल्ला-गुल्ला हो, हमारे जैसे बेवकूफ लोग हों, धक्का-मुक्की हो वहाँ भी आपका आनंद बना रहे यह अनुभव तो आप हमारे साथ चलो वहीं होगा, उधर गुफा में नहीं होगा।''

गृहस्थ-जीवन जीनेवाले वे लोग कितनी ऊँचाई के धनी थे ! लेकिन बाबाजी की सरलता भी गजब की थी। वे गुफा में नहीं गये, विघ्न में

गये। यहाँ श्रीकृष्ण की बात की महिमा प्रकट हो जाती है :

सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ।

'वह (भक्त) निश्चल भक्तियोग से युक्त हो जाता है - इसमें कुछ भी संशय नहीं है।'

(गीता : १०.७)

ध्यान-समाधि करके ऊँची दशा के धनी तो बन जाओ, एकांत-सेवन करके परिपक्व तो हो जाओ लेकिन जब नीची दशा हो तब भी अपनी ऊँची ज्ञानधारा में ही रहो, सदा नीची दशा में न रहो। नीची दशा में आना पड़े तो भी अंदर की स्थिति ऊँची रहे।

शुरू-शुरू में इस दशा को अभ्यास से बनाये रखना पड़ता है। जैसे कोई कटी डाल आपने पकड़ रखी है, आपने हाथ हटाया तो वह गिर पड़ेगी। लेकिन वह डाल आपने जमीन में लगा दी, उसने जड़ें पकड़ लीं और पेड़ बन गया अथवा वह डाल मजबूत हो गयी; अब आप क्या करते हो ? आपको उसे पकड़कर रखना नहीं पड़ता है। अब तो जबरदस्ती आप उसे पकड़कर नीचे लाते हो, उससे पत्ते, फल, फूल जो तोड़ना है तोड़ा, फिर छोड़ा तो अपनी जगह चली जाती है।

गुरुजी की कृपा से हमें ज्ञान हो गया फिर भी एकांत में रहे तो और परिपक्व हो गये। अब व्यवहार में अपने मन को ले आते हैं, फिर छोड़ा तो वहीं। आपको ध्यान करना पड़े ऐसा नहीं। जैसे आप मेहमान होकर कहीं गये और कीमती-से-कीमती अपनी लाखों रुपये की अँगूठी अथवा कोई कीमती चीज भूलकर आ गये। आप वह घर तो छोड़कर आये लेकिन लेते-देते, मुसाफिरी करते अथवा बाजार में खरीददारी करते समय भी स्मृति बनी रहेगी कि 'जायेंगे, वह उठायेंगे...'। ऐसे ही भगवत्सुख मिलने के बाद, उसमें स्थिति होने के बाद मनुष्य नीचे के व्यवहार में आते हुए भी अनायास परमेश्वर में ही रहता है। जीवन जीने का मजा तो तब आता है।

इसीको संत कबीरजी ने कहा है :

साधो सहज समाधि भली।

आँख न मूंदौं कान न रूँधौं,

तनिक कष्ट नहिं धारौं।

खुले नैन पहिचानौं हँसि हँसि,

सुन्दर रूप निहारौं ॥

यह हुआ दृढ़ साक्षात्कार, जीवन्मुक्त दशा ! यह होती है पूर्ण पुरुष की दशा ! धन्य-धन्य हैं वे पूर्णता पाये हुए महापुरुष और धनभागी हैं उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति से सम्पन्न हृदय ! ❐

(पृष्ठ ९ 'भगवान सबको सद्बुद्धि दें' का शेष)

और एक-दूसरे के लिए सद्भाव से मनुष्य मनुष्य का पोषक हो जाता है।

जिनके हृदय में भगवद्भक्ति होती है, ब्रह्मज्ञानी गुरुओं का सत्संग होता है उनके चित्त में मधुरता होती है और वह मधुरता मनुष्य के अंदर **'परस्परं भावयन्तु'** जैसे सद्गुणों को विकसित कर मानव को महेश्वर से मिलने में सफल बना देती है। सत्संग आदि में न जानेवाले, निंदा करने-सुननेवाले, आरोप सुनने और लगानेवाले के हृदय में वह रस नहीं होता अपितु अशांति की ज्वाला भड़कती रहती है, जिससे आदमी अशांत होकर तिर्यक् आदि नीच योनियों को पाता है। इसलिए कहा गया है कि वे आदमी अभागे हैं जो सत्संग से वंचित हैं, वैदिक ज्ञान से वंचित हैं। 'भागवत' में आता है : **मन्दाः सुमन्दमतयाः ।** मैं अपनी ओर से किसीको लानत नहीं करता।

मन्दाः सुमन्दमतयो मन्दभाग्या ह्युपद्रुताः ।

वे मंदमति, मंदभागी और उपद्रवी हैं। खुद तो उपद्रवी हैं, दूसरों को भी ऐसे-वैसे साजिश करके, अफवाह फैलाकर उपद्रवों की आग में झोंकनेवाले होते हैं। लेकिन हम तो चाहते हैं कि भगवान उनको भी सद्बुद्धि दें। हे प्रभु ! आनंददाता ! उनको, हमको, सबको ज्ञान दीजिये। ❐

ऊँचे अधिकारियों को संत ज्यादा समय क्यों दें ?

ब्रह्मलीन संत श्री देवराहा बाबाजी के जीवन की एक घटना है । कुछ लोगों ने भ्रमवश यह आरोप लगाया कि न्यायाधीश, जिलाधीश, अभियंता, प्राध्यापक, उच्च अधिकारीगण तथा नेताओं को देवराहा बाबा अधिक समय देते हैं । लोगों की माँग थी कि सभीको अवसर मिले, सभी महाराजजी से बातें कर सकें । बाबा ने इस प्रश्न का समाधान कर दिया : ''जो सम्पन्न हैं, उनके भटकने की संभावना भी अधिक है ।

प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ।

ऐसे लोग यदि अपने धर्म से विमुख हो जायें तो प्रजा का, देश का अहित ज्यादा होगा लेकिन संत-सान्निध्य पाकर आचार-विचार से रहने लगें तो समाज का अधिक कल्याण होगा । जिनको लोग साधारणतया बड़ा अमीर कहते हैं वस्तुतः वे अत्यंत गरीब हैं क्योंकि वे तृष्णा से भरे हुए हैं। जगद्गुरु आद्य शंकराचार्यजी ने ठीक ही कहा है :

को वा दरिद्रो हि विशालतृष्णः ।

तात्पर्य यह है कि दरिद्र वे ही हैं जिनकी तृष्णा बड़ी है। वस्तुतः गरीब वे नहीं जिनके पास धन कम है, गरीब तो वे हैं जिनकी चाह अधिक है। धनी वे हैं जिनके पास आध्यात्मिक ज्ञान है ।''

ऊँचे पदाधिकारियों के प्रति पक्षपात के संदर्भ में देवराहा महाराजजी ने आगे स्पष्ट किया : ''ये कर्मचारी बड़े समूह का नियंत्रण करते हैं। लम्बे सत्संग से अगर इनका स्वभाव बदलता है तो लोक (समाज) का ही कल्याण होता है । सामान्य व्यक्ति के जीवन की व्यक्तिगत चिंताएँ दूर होने से उनका व्यक्तिगत कल्याण होता है लेकिन नेताओं, न्यायाधीशों, वकीलों तथा उच्च अधिकारियों के आत्मोन्नयन से समष्टि का मंगल होगा । व्यष्टि के मंगल से समष्टि का मंगल सर्वदा श्रेयस्कर होता है । इसका माध्यम मेरा उपदेश हो तो हर्ज ही क्या है ?''

पूज्य देवराहा बाबा का उपर्युक्त कथन शत-प्रतिशत सत्य है । प्रतिभावान, उच्च पदवीधारी व्यक्तियों के चित्त यदि शुद्ध हो जायें तो वे प्रकाशपुंज तथा प्रेरणास्रोत बन जाते हैं और उनसे समाज का व्यापक हित होता है । व्यापक हित न भी हो तो भी बुराइयाँ तो नियंत्रित होती ही हैं । ❐

इष्ट-साक्षात्कार हेतु गुरुनिर्दिष्ट साधना करो

जब मैं अकेला गंगाजी में डूबने लगा था तब किसीने आकर पीछे से मेरी गर्दन पकड़ी और मुझे पानी से बाहर निकालकर गंगा-किनारे पर रख दिया था । जब मुझे बैठने-सोने की जगह नहीं मिलती थी तब किसीने मुझे बुलाकर बैठाया और सुलाया था । जहाँ मैं भूखा-प्यासा सोनेवाला था वहाँ स्वयं भगवान ने आकर मुझे भोजन-पानी दिया और मुझे खिला-पिलाकर सुलाया । भगवान स्वयमेव योगक्षेम वहन करते हैं, अप्राप्त की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा करते हैं । मैंने गायत्री का जप किया, अनुष्ठान किया । मैंने श्रीकृष्ण मंत्र का जप किया । इष्ट देवता के साक्षात्कार का जैसा वर्णन शास्त्रों में है, बिल्कुल वैसा ही होता है । इन्हीं चर्मचक्षुओं से इष्ट का साक्षात्कार होता है । उस पर शंका करने का कोई कारण नहीं है । आज भी भगवान प्रकट होकर दर्शन देते हैं, आज भी भगवान रक्षा करते हैं, संदेह मत करो अपितु इष्ट-साक्षात्कार हेतु गुरुनिर्दिष्ट साधना करो ।

– ब्रह्मलीन स्वामी श्री अखंडानंदजी सरस्वती

ब्रह्मज्ञानी की मति कौन बखाने ?

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

ब्रह्मज्ञानी लेते, देते, हँसते, रोते सब कुछ करते दिखते हैं फिर भी वे कुछ नहीं करते हैं। उनको अपनी पूर्णता का बोध है। देखने में तो वे सांसारिक व्यवहार में जीते हैं लेकिन अंतरात्मा में वे अपने परम पद का अनुभव ज्यों-का-त्यों करते हैं।

जैसे कोई प्राध्यापक बन गया। वह अपने देहाती मित्रों के बीच देहाती ढंग से बैठता-उठता है फिर भी उसका प्राध्यापकपना नहीं जाता। ऐसे ही संसारियों के बीच ज्ञानी रहते हैं फिर भी उनका आत्मज्ञान, परमात्मानुभव नहीं जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण संसारियों के बीच रहते थे। खाते, पीते, हँसते, खेलते - सब करते थे। भगवान रामजी भी सब करते थे; राजा जनक, महर्षि वसिष्ठजी, संत कबीरजी भी सब करते थे, फिर भी अकर्ता-पद में ज्यों-के-त्यों थे। इसलिए भगवान और भगवत्प्राप्त ज्ञानी के विषय में कुछ सोचना या कुछ गाँठ बाँध लेना मूर्खता है।

गुरु अर्जुनदेवजी ने कहा :

हरि बिअंतु हउ मिति करि वरनउ
किआ जाना होइ कैसो रे ॥
ब्रहम गिआनी की मिति कउनु बखानै ॥
ब्रहम गिआनी की गति ब्रहम गिआनी जानै ॥

ऐसी मति हो जाती है उस ब्रह्मवेत्ता महापुरुष की। फिर चाहे मंसूर 'अनलहक' कहें या कबीरजी कहें कि 'वह अव्यक्त है' तब भी वही बात है।

जिन पाया तिन छुपाया... जिनको परमात्मा का बोध हुआ, वे अपने-आपको छुपा देते हैं लेकिन साधकों के आगे वे छुप नहीं सकते हैं। **छुपत नहीं कछु छुपे छुपाया।** ऐसे ज्ञानी सत्पात्र के आगे अपने अनुभव का पात्र उँडेलते हैं। जैसे भोजन किया तो उसकी डकार आ जाती है, जैसे कछुआ जरूरत पड़ती है तो अपने अंग निकालता है और फिर सिकोड़ लेता है, उसी तरह ज्ञानी कोई-कोई ज्ञान को समझनेवाला साधक मिलता है तो अपने अनुभव को प्रकट कर देते हैं।

श्रीकृष्ण को वसुदेव-देवकी बोलते हैं : ''आप साक्षात् परात्पर ब्रह्म हैं, घट-घट के वासी हैं।''

श्रीकृष्ण बोलते हैं : ''यह आपकी उदारता है। जिस ब्रह्मस्वरूप में मैं हूँ, वही तो आप भी हैं पिताजी ! सभी हैं। आप तो ऐसे ही श्रद्धाभाव से बोलते हैं, बाकी मैं तो आपका बेटा हूँ।''

ज्ञानी पिता का भी रोल अदा करते हैं, पुत्र का भी। पिता के आगे पुत्र बन जाते हैं, माँ के आगे बेटा बन जाते हैं। पत्नी के आगे पति बनते हुए दिखते हैं, शिष्यों के आगे गुरु बनते हुए दिखते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञानी तो ऐसे होते हैं कि तमाम देवता, पिता, माता, नक्षत्र, सूर्य, तमाम निहारिकाएँ सब उन्हींके व्यापक स्वरूप में होते हैं। आकाश को भी वे ढाँपे हुए हैं, ऐसे ब्रह्मवेत्ता होते हैं। आकाश तो सबको ढाँपा हुआ है लेकिन ब्रह्म-परमात्मा आकाश को भी ढाँपा हुआ है, ऐसा ज्ञानियों का अनुभव होता है। तुम एक बार ऐसा अनुभव करोगे तो सारे रहस्य खुल जायेंगे।

ज्ञानी निवृत्ति में प्रवृत्ति, प्रवृत्ति में निवृत्ति तथा कर्म में अकर्म, अकर्म में कर्म को देखते हैं। जैसे कोई आदमी कुछ भी नहीं कर रहा है यह बाहर से अकर्म है लेकिन उसका मन कर्म करता रहता है तो यह अकर्म में कर्म है। ज्ञानी शरीर से, मन से सब करते रहते हैं लेकिन आत्मा में देखते हैं कि कोई कर्तापन नहीं है तो वे कर्म में भी अकर्म देख रहे हैं।

इसलिए ब्रह्मसुख पाना चाहिए, ब्रह्मज्ञान पाना चाहिए, ब्रह्म की भावना करनी चाहिए। ❐

जीवनशक्ति का विकास

(गतांक से आगे)

बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू आदि के व्यसन से प्राणशक्ति को अत्यंत हानि होती है । केवल इन चीजों का व्यसनी ही नहीं बल्कि उसके संपर्क में आनेवाले भी इनके दुष्परिणामों के शिकार होते हैं । कमरे में एक व्यक्ति बीड़ी या सिगरेट पीता है तो उसके शरीर के रक्त में जितना तम्बाकू का विष निकोटीन फैल जाता है, उतना ही निकोटीन बीस मिनट के अंदर ही कमरे में रहनेवाले अन्य सब लोगों के रक्त में भी मिल जाता है। इस प्रकार बीड़ी, सिगरेट पीनेवाले के इर्द-गिर्द रहनेवालों को भी उतनी ही हानि होती है । बीड़ी-सिगरेट पीनेवाले आदमी का चित्र देखने से भी प्राणशक्ति का क्षय होता है । एक्स-रे मशीन के आस-पास दस फुट के विस्तार में जानेवाले आदमी की प्राणशक्ति में घाटा होता है। एक्स-रे फोटो खिंचवानेवाले मरीज के साथ रहनेवाले व्यक्ति को सावधान रहना चाहिए। उसे एक्स-रे रक्षणात्मक कोट पहनकर ही मरीज के साथ रहना चाहिए ।

(७) आहार का प्रभाव : ब्रेड, बिस्कुट, मिठाई, फास्टफूड आदि कृत्रिम खाद्य पदार्थों से तथा बार-बार गरम किये हुए और अतिशय पकाये हुए पदार्थों से जीवनशक्ति क्षीण होती है । प्रायः आजकल हम जो पदार्थ खा रहे हैं, वे जितना हम मानते हैं उतने लाभदायक नहीं हैं । हमें केवल आदत पड़ गयी है इसलिए खा रहे हैं ।

'थोड़ी शक्कर खाने से क्या हानि है ? थोड़ी शराब पीने से क्या हानि है ?' - ऐसा सोचकर लोग आदत डालते हैं । लेकिन कम मात्रा में लेने से भी शक्कर आदि का हानिकारक प्रभाव पड़ता ही है ।

एक सामान्य आदमी की जीवनशक्ति यंत्र के द्वारा जाँच लो, फिर उसके मुँह में शक्कर दो और जीवनशक्ति को जाँचो, वह कम हुई मिलेगी। तदनंतर उसके मुँह में शहद दो और जीवनशक्ति जाँचो, वह बढ़ी हुई पाओगे। इस प्रकार डॉ. डायमंड ने प्रयोगों से सिद्ध किया कि कृत्रिम शक्कर आदि पदार्थों के उपभोग से जीवनशक्ति का ह्रास होता है और प्राकृतिक फल, सब्जी आदि के सेवन से विकास होता है । कंपनियों के द्वारा बनाया गया और प्रयोगशालाओं के द्वारा पास किया हुआ 'बोतलबंद' शहद जीवनशक्ति के लिए लाभदायी नहीं होता, जबकि प्राकृतिक शहद लाभदायी होता है । शक्कर बनाने के कारखाने में गन्ने के रस को शुद्ध करने के लिए जिन रसायनों का उपयोग किया जाता है वे हानिकारक होते हैं ।

हमारे यहाँ करोड़ों-अरबों रुपये कृत्रिम खाद्य पदार्थों तथा बीड़ी-सिगरेट के पीछे खर्च किये जाते हैं । परिणाम में वे हानि ही करते हैं । प्राकृतिक वनस्पति, तरकारी आदि भी इस प्रकार पकायी जाती हैं कि उनके जीवनतत्त्व नष्ट हो जाते हैं ।

(८) शारीरिक स्थिति का प्रभाव : जो लोग बिना ढंग के बैठते हैं, सोते हैं, खड़े रहते या चलते हैं वे खराब तो दिखते ही हैं, अधिक जीवनशक्ति का व्यय भी करते हैं। हर चेष्टा में शारीरिक स्थिति व्यवस्थित रहने से प्राणशक्ति के वहन में सहाय मिलती है । कमर झुकाकर, रीढ़ की हड्डी टेढ़ी रखकर बैठने-चलनेवालों की जीवनशक्ति कम हो जाती है । उसी व्यक्ति को कमर, रीढ़ की हड्डी, गर्दन व सिर सीधा रखकर बैठाया जाय और फिर जीवनशक्ति नापी जाय तो बढ़ी हुई मिलेगी ।

पूर्व या दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोना लाभदायक है जबकि पश्चिम या उत्तर की ओर सिर करके सोने से जीवनशक्ति का ह्रास होता है ।

(आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'जीवन विकास' से क्रमशः) ❑

संत श्री आसारामजी बापू को बदनाम करनेवाला राजेश सोलंकी जेल की सलाखों के पीछे

समाचार पत्र 'गुजरात प्रवाह', अमदावाद, १८.०९.०८ । सत्य आखिर सत्य सिद्ध होकर ही रहता है । ऐसा ही हुआ है संत श्री आसारामजी बापू के संदर्भ में । बापू को बदनाम करनेवाले खुद राजेश सोलंकी को ही आज जेल की सलाखों के पीछे जाना पड़ा, यह आज सूरत में चर्चित विषय है । जिसने अपनी पत्नी को बदनाम करने में कुछ बाकी नहीं रखा था, वह अब संतों को बदनाम करने निकला था किंतु कुदरत ने कहा है- यहाँ किये हुए कर्म यहीं भोगने पड़ेंगे । राजेश सोलंकी खुद ही अपने खौफनाक खेल में फँस गया और सत्य आखिर प्रकट होकर ही रहा । संत श्री आसारामजी बापू व नारायण स्वामी को बदनाम करने के लिए उसने जो आक्षेप लगाये थे, उनमें 'रामायण' के रावण व 'महाभारत' के दुर्योधन को भी लज्जित कर दे ऐसी कपटी चाल वह चल रहा था, जिसमें वह विफल हुआ और सत्य की विजय हुई ।

आज हिन्दुस्तान के लाखों लोग इस राजेश सोलंकी की काली करतूतों की निंदा कर रहे हैं तथा संतों को बदनाम करनेवाले लोगों के मुँह पर ताले लग गये हैं । इतिहास साक्षी है, जिसने भी गलत तरीके अपनाकर संतों को बदनाम करने के कार्य किये हैं, उसको ईश्वर ने चमत्कार दिखाया है, फिर वह भले राजेश सोलंकी ही क्यों न हो ! ❐

पत्नी बकुला के नाम से संत श्री आसारामजी आश्रम के खिलाफ आक्षेप लगानेवाला राजेश सोलंकी फँसा

समाचार पत्र 'गुजरात प्रवाह', अमदावाद, १८.०९.०८ । डींडोली रोड पर रहनेवाली अपनी पत्नी के घर झगड़ा करने के लिए आये हुए राजेश सोलंकी को उसकी पत्नी बकुला एवं आसपास की महिलाओं ने मिलकर खूब पिटाई करके लिंबायत पुलिस के हवाले कर दिया । पकड़े गये राजेश के विरुद्ध इससे पूर्व ठगी के गुनाह भी दर्ज हैं ।

बकुला की अपने पति राजेश सुखाभाई सोलंकी, निवास कांगवई गाँव, जि. नवसारी (गुज.) के साथ अनबन होने से (तथा बकुला द्वारा दिनांक १८ अगस्त २००८ को दर्ज की गयी एफआईआर क्र. १४९/०८ के अनुसार पिछले तीन वर्षों से उसे राजेश द्वारा पैसों के लिए शारीरिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाने से) बकुला बहन ने राजेश के खिलाफ चिखली पुलिस में 'दहेज प्रतिबंधक धारा' की कलम ४९८ (क) के मुताबिक गुनाह दर्ज करवाया था । आज राजेश सोलंकी ने बकुला बहन के डींडोली स्थित घर पर जाकर बहुत झगड़ा किया था, जिससे आसपास की महिलाओं एवं बकुला बहन ने राजेश की खूब पिटाई करके उसे लिंबायत पुलिस के हवाले कर दिया ।

इससे पूर्व राजेश सोलंकी के खिलाफ नकली डिप्टी कलेक्टर बनकर लोगों से पैसे ऐंठकर ठगी करने का गुनाह भी पुलिस रिकार्ड में दर्ज है (जिसके लिए वह डेढ़ साल की सजा भोग चुका है) । ❐

यदि प्रशासन व पुलिस राजेश सोलंकी जैसे झूठे, सजाभोगी लोगों की अच्छी तरह से जाँच करे, पूछताछ करे तो इन जैसे लोगों को मोहरा बनाकर षड्यंत्र रचनेवाले लोगों के चेहरे बेनकाब हो सकते हैं ।

संत श्री आसारामजी आश्रम, बापूनगर में तोड़-फोड़ करनेवाला नागजी देसाई भी जेल में

'लोकमित्र', अमदावाद, २३-९-२००८ एवं 'प्रेस की ताकत' से : हाल में संत श्री आसारामजी बापू पर अनेक आक्षेप लगाये जा रहे हैं, जिनमें से प्रत्येक आक्षेप वर्तमान समय में झूठा साबित हो रहा है। संत श्री आसारामजी आश्रम, बापूनगर में तोड़-फोड़ करके आग लगाकर लोगों को भड़काने निकला नागजी देसाई खुद ही जेल की सलाखों के पीछे धकेला गया है।

गाँधीजी ने कहा है कि 'एक हजार लोग असत्य को सत्य साबित करने के प्रयास करें तो भी सत्य आखिर सत्य ही साबित होगा।'

संतों को बदनाम करने निकले लोग अब खुले पड़ गये हैं ऐसा स्पष्ट हो रहा है। आज भी गुजरात की आम जनता आसारामजी बापू में श्रद्धा रखती है और उन्हें प्रणाम करती है, फिर भी उन स्वार्थी लोगों का दिमाग नहीं खुल रहा है और आज वे खुद को ही झूठा साबित कर रहे हैं, जिस प्रकार बापूनगर स्थित संत श्री आसारामजी आश्रम में तोड़-फोड़ कर आम जनता को गुमराह करने निकले नागजी देसाई को स्वयं कुदरत ने सजा दी और वह जेल की सलाखों के पीछे धकेला गया। नागजी देसाई तथा उसके साथ गये अनेक असामाजिक तत्त्व, जिन्होंने तोड़-फोड़ कर आतंक फैलाकर पब्लिक को गुमराह करने के जो वाहियात प्रयत्न किये थे, उनमें वे लोग विफल साबित हुए थे और आखिर सत्य की विजय हुई। तोड़-फोड़ करने गये असामाजिक तत्त्वों के खिलाफ कानूनी कदम उठाकर 'पासा' कानून के अंतर्गत कार्यवाही करने के प्रयत्न गतिमान हुए हैं।

ज्ञात रहे 'पासा' का कानून पुलिस उसी व्यक्ति पर लगाती है, जिसे समाज में दंगा फैलानेवाला मानती हो, जिसका समाज में रहना खतरनाक मानती हो। पुलिस ने नागजी देसाई को 'पासा' के तहत पकड़कर अदालत में पेश किया व माननीय न्यायाधीश ने उसे जेल भेज दिया है। ज्ञात रहे कि नागजी पर सन् २००१ में भी पारिवारिक झगड़े का मुकदमा दर्ज हुआ था। 'पासा' का कानून बहुत ही खतरनाक लोगों पर लगाया जाता है।

संत श्री आसारामजी बापू जैसे महान संत को बदनाम कर आखिर क्या मिला ? सिर्फ जेल की सलाखें ? असत्य को सत्य साबित करने निकले चंद लोग, जो खुद की मनुष्यबुद्धि खो चुके थे, उनको स्वयं प्रकृति ने अक्ल प्रदान की। ❑

(पृष्ठ ४ से 'संतों के द्वारा समाज को उद्बोधन' का शेष)
किया गया था। आगे भी इस प्रकार के अनेक महात्माओं को बदनाम किया जायेगा, हालाँकि हिन्दू समाज पर इसका असर बिल्कुल ही नहीं पड़ेगा। चारों ओर से जो हमारे ऊपर आक्रमण हो रहे हैं, उनके प्रति हम सब लोग और भी सचेत रहें और सचेत रहकर जगह-जगह पर सुप्रचार करें क्योंकि आज प्रचार का युग है।

श्री मुकेश जैन, अध्यक्ष, धर्मरक्षा दारा सेना : बापू के साथ जो षड्यंत्र रचा जा रहा है, उस षड्यंत्र को देखते हुए मैं जनता से कहूँगा कि ऐसे दुष्टों के खिलाफ आप सब आगे बढ़ें। ऐसे अधर्म का नाश करना हर हिन्दू का पहला धर्म है।

श्रीमती हिमानी सावरकर, अध्यक्षा, अखिल भारतीय महासभा : हम संतों पर लगाये जा रहे झूठे इल्जाम क्यों सहें ? षड्यंत्रकारी खुद ही झूठे हैं, निकम्मे हैं और संतों जैसे समाजोद्धार के कार्य तो कर नहीं पाते हैं। संत आसारामजी बापू और अन्य संत जो कर पाते हैं, इतनी सच्चाई, शक्ति और सद्भावना उनमें कहाँ ? इसीलिए वे झूठे इल्जाम लगाते हैं और बुद्धिभ्रम पैदा करते हैं। अब हम यह बिल्कुल नहीं सहेंगे। ❑

आस्था पर हमला आतंकवाद से कम नहीं

(पत्रिका 'रौशनी दर्शन', सितम्बर २००८ से संकलित)

संत-महात्माओं की धरती जब सियासत की चपेट में आती है तो संबंधित लोग आस्था पर भी गहरी चोट करने से नहीं चूकते । विगत दिनों संत आसारामजी बापू के साथ कुछ ऐसा ही हुआ । सस्ती सियासत उनकी सालों की साधना के समानांतर खड़ी होने की कोशिश करती नजर आयी । जिन आसारामजी का उपसर्ग 'संत' और प्रत्यय 'बापू' है, उन्हें पता नहीं सियासतदाँओं और मीडिया ने बिना किसी ठोस पड़ताल के किन-किन विशेषणों से नवाजा । वरिष्ठ पत्रकार व आश्रम के मीडिया सलाहकार नीरज भूषण का कहना है कि ''विगत दिनों परम पूजनीय संत श्री आसारामजी बापू एवं उनके आश्रमों के संबंध में कुछ अखबार व टेलीविजन चैनलों ने एकपक्षीय खबरों को अनावश्यक महत्त्व दिया और सनसनी फैलाने की कोशिशें कीं। खबरें सिर्फ झूठी ही नहीं थीं बल्कि बुरी मंशा से प्रकाशित एवं प्रसारित की गयी थीं । खबरों में बापू की जानबूझकर निंदा की गयी थी एवं आश्रमों को कलंकित करने के लिए दुष्प्रचार भी हुआ । करोड़ों साधकों और अनुयायियों की आस्था एवं भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने की भी कोशिशें हुईं ।''

संतों के आश्रम में प्रेम और करुणा का वास होता है । संत आसारामजी ने करोड़ों दिलों में यूँ ही जगह नहीं बनायी । किसीको हत्यारा पल भर में कहा जा सकता है लेकिन 'संत' और 'बापू' जैसा विशेषण सदियों में किसीको मिलता है । हर साल गुरुपूर्णिमा पर संत आसारामजी बापू के दर्शन के लिए लाखों की भीड़ इकट्ठी होती है । ३६ वर्ष पूर्व स्थापित उनके सुरम्य आश्रम ने पूरे देश में भक्ति की गंगा प्रवाहित की, जिसमें डुबकी लगाते हुए करोड़ों भक्तों ने स्वयं को संस्कारित किया । किसी भी देश की सांस्कृतिक या धार्मिक विरासत और आस्था पर हमला करना किसी आतंकवादी हमले से कम खतरनाक नहीं होता है । संत आसारामजी बापू की ओर से पूरे विश्व में लगभग ३०० आश्रम और १२०० से अधिक योग वेदांत सेवा समितियाँ संचालित हैं । यह वह जगह है जहाँ आदमी अपने होने की वजह को तलाशते हुए सत्यमार्ग पर चलने की कोशिश करता है । अब सवाल यह उठता है कि जिस संत ने जीवन भर मानव-कल्याण के लिए साधना की, प्रवचनों के माध्यम से घर-घर में सद्विचारों का माहौल बनाया, उन्हें क्या जरूरत थी किसी बच्चे की हत्या करने की ? हत्या जैसे शब्द का इस्तेमाल भी जहाँ होना पाप-समझा जाता है, वहाँ हत्या की गुंजाइश कहाँ तक ठहरती है ? फिर भी संत आसारामजी बापू को कटघरे में रखने का प्रयास किया गया । सर्वविदित है कि उसके बाद हुए गुजरात में बंद तथा आश्रम के प्रभामंडल को धूमिल करने की तमाम कोशिशें सियासत से प्रेरित थीं ।

अमदावाद और छिन्दवाड़ा की घटना को मीडिया के कुछ भाग द्वारा जिस प्रकार उछाला गया, वह चिंताजनक है । बापू एवं आश्रमों पर तंत्र-मंत्र करने का झूठा एवं भ्रामक आरोप लगाया गया । आश्चर्यजनक है कि सभी खबरें एकपक्षीय ही थीं ।

अमदावाद गुरुकुल के दोनों छात्रों के माता-पिता या परिजन कोई दंगा-फसाद या बंद नहीं चाहते थे, फिर भी कुछ असामाजिक तत्त्वों ने गड़बड़ी फैलायी । जाहिर है इसके पीछे वे लोग हैं जो भारतीय संस्कृति एवं संतों को बदनाम करना चाहते हैं । ये लोग परम पूजनीय बापूजी एवं उनके पवित्र आश्रमों के बारे में दुष्प्रचार कर द्वेषपूर्ण ढंग से समाज में भ्रांतियाँ फैला रहे हैं । ऐसे लोग जिनका आश्रम से कोई लेना-देना भी नहीं है, उन्हें मीडिया के एक भाग द्वारा पूर्णतः अनावश्यक तरीके से भड़काया भी जा रहा है व उनके माध्यम से अनर्गल बातें भी कहलायी जा रही हैं । यह सरासर गलत है । हम इसकी कठोर शब्दों में निंदा करते हैं ।

छिन्दवाड़ा गुरुकुल में साजिश का शिकार हुए दोनों छात्रों के माता-पिता की आस्था किस तरह बापूजी में यथावत् है, इसकी सुध मीडिया के भ्रमित लोगों को नहीं है या फिर वे जानबूझकर सुध लेना नहीं चाहते ।

आश्रमों की जमीनों के बारे में भी कई जगह कुप्रचार हो रहे हैं जबकि सत्य कुछ और है । दिल्ली में रीज आश्रम (करोल बाग) एवं रजोकरी आश्रम, सूरत की जमीन तथा छिन्दवाड़ा के गुरुकुल ट्रस्ट के विषय में झूठी, मनगढ़ंत खबरें बतायी गयीं । कुप्रचारकों के ऐसे प्रयासों से जनता को गुमराह नहीं होना चाहिए । ❑

त्रिदोष-सिद्धांत

(गतांक से आगे)

प्रत्येक मनुष्य के विशिष्ट शारीरिक स्वरूप व मानसिक स्वभाव को उसकी 'प्रकृति' कहते हैं। गर्भधारण के समय वात-पित्त-कफ इनमें से जिस दोष की प्रधानता होती है, उसके अनुसार मनुष्य की वातप्रकृति, पित्तप्रकृति या कफप्रकृति बनती है। प्रकृति के इस प्रधान दोष का प्रभाव शरीर की सभी धातुओं, इन्द्रियों, मन व बुद्धि पर पड़ता है। अपनी प्रकृति के अनुसार आहार-विहार व उपचार आरोग्यपूर्ण दीर्घायुष्य के लिए अत्यंत जरूरी है।

कफप्रकृति

कफप्रकृति के लोगों का शरीर सुकुमार, सुडौल व बल-सम्पन्न होता है। मुख प्रसन्न, नेत्र विशाल, स्वर गंभीर व स्निग्ध होता है। वर्ण गेहूँ के समान, कांति सतेज, केश काले व घने होते हैं। उनकी भूख व प्यास मंद होती है। उन्हें तीखे-कड़वे-कसैले, उष्ण व रुक्ष पदार्थ प्रिय होते हैं तथा नींद अधिक आती है। वे विचारवान, धैर्यवान, सहनशील, क्षमाशील व परिश्रमी होते हैं। वे मितभाषी, सरल, विनम्र व धर्मात्मा होते हैं। वे बात को देर से समझते हैं लेकिन समझी हुई बात उनकी स्मृति से बाहर नहीं जाती। वे दूरदर्शी, वीर्यसम्पन्न, विपुल संतानवाले व दीर्घायु होते हैं।

जल को ७५% औटाकर शेष जल रात को पी के सोने से कफजन्य व्याधियों में लाभ होता है।

पित्तप्रकृति

पित्तप्रकृति के व्यक्ति उष्ण आहार, धूप, ताप, उष्ण ऋतु सहने में असमर्थ होते हैं। वे गौर वर्ण के व सुकुमार होते हैं। उनके नख, नेत्र, जिह्वा, होंठ, हथेली, तलुए आरक्त वर्ण के होते हैं, शरीर पर तिल अधिक होते हैं। वार्धक्य के लक्षण उनमें जल्दी दिखायी देते हैं। उनकी जठराग्नि तीव्र होती है, अतः वे बार-बार अन्नग्रहण करते हैं। उन्हें मधुर-कसैला, कड़वा व शीत आहार प्रिय होता है। पित्त की तीक्ष्णता के कारण वे पराक्रमी, बुद्धिमान, तेजस्वी, निर्भय, अभिमानी, शीघ्र कुपित व शीघ्र प्रसन्न होनेवाले होते हैं। उनकी निद्रा अल्प व शांत, स्मृति मध्यम व वाणी स्पष्ट होती है। वे अल्प वीर्य, अल्प संतान, मध्यम बल व मध्यम आयुवाले होते हैं।

जल को ५०% औटाकर शेष जल रात को पी के सोने से पित्तजन्य व्याधियों में लाभ होता है।

वातप्रकृति

वातप्रकृतिवाले मनुष्यों का शरीर रुक्ष, कृश, छोटा, स्वर रुक्ष व वर्ण श्याम होता है। वायु के चल गुण के कारण उनकी चेष्टाएँ, गति व वाणी चंचल होती है। निद्रा अल्प व खंडित होती है। जठराग्नि विषम होने के कारण क्षुधा कभी अधिक, कभी अल्प होती है। शरीर पर शिराओं का प्रसार अधिक दिखायी देता है। वे अधिक बोलते हैं। सभी कार्यों को शीघ्र आरंभ करते हैं। बात को शीघ्र ही ग्रहण कर लेते हैं पर शीघ्र ही भूल जाते हैं। उनको रोग भी शीघ्र होते हैं। वे शीतलता नहीं सह सकते। उन्हें मधुर-अम्ल-लवण रसयुक्त उष्ण आहार प्रिय होता है। वे नृत्य-वाद्य, हास्य-विलासप्रिय व अजितेन्द्रिय होते हैं। वे अल्प बल, अल्प वीर्य, अल्प संतान व अल्प आयुवाले होते हैं।

जल को २५% औटाकर शेष जल रात को पी के सोने से वातजन्य व्याधियों में लाभ होता है।

उपर्युक्त लक्षणों के द्वारा अपनी प्रकृति का विनिश्चय कर तदनुसार आहार-विहार का नियोजन करना चाहिए। **(क्रमशः)**

(अगले अंक में देखें - 'प्रकृति के अनुसार आहार-विहार')

आँवले के वृक्ष से लाभ उठायें

शरद पूर्णिमा के बाद आँवले के वृक्ष रसदार आँवलों से लद जाते हैं। आँवले के केवल फल ही नहीं अपितु वृक्ष के इर्द-गिर्द का वातावरण

भी रसायन व जीवनशक्तिवर्धक गुणों से ओतप्रोत होता है । आँवले के वृक्ष के सान्निध्य में रहने से पित्तशमन, रक्तसंवर्धन व रक्ताभिसरण सुचारु रूप से होने लगता है । इसीलिए कार्तिक माह की देवउठी एकादशी से त्रिपुरारी पूर्णिमा (९ से १३ नवम्बर) तक आँवले के वृक्ष का पूजन, उसके नीचे बैठकर भोजन तथा विश्रांति करने की प्राचीन परंपरा है । इससे शरद ऋतु में प्रकुपित हुए पित्त को शांत करने में मदद मिलती है, प्राणशक्ति बढ़ती है व आध्यात्मिक प्रगति में भी सहायता मिलती है । ❐

पूज्य बापूजी की सुंदर सलाह

विजया दशमी से लेकर शरद पूर्णिमा (९ से १४ अक्टूबर) तक रोज रात को चाँदनी में खुले में बैठकर चाँद की तरफ १०-१५ मिनट या अधिक समय एकटक देखें । यह प्रयोग नेत्रज्योति-वृद्धि के लिए अत्यंत लाभदायक है । इसके साथ 'त्रिफला रसायन' के सेवन से अद्भुत लाभ होता है- यह मेरा अनुभव है । मेरा चश्मा उतर गया यह आप सभी जानते हैं । इस प्रयोग से नेत्ररोगों में भी लाभ होता है ।

('त्रिफला रसायन' बनाने की विधि 'ऋषि प्रसाद' के अक्टूबर २००७ के अंक में पृष्ठ २७ पर दी हुई है ।)

(पृष्ठ ७ 'प्रसाद के अनादर से लक्ष्मीजी रुष्ट' का शेष)

जहाँ शंखध्वनि होती है तथा शंख, शालग्राम, तुलसी इनका निवास रहता है एवं उनकी सेवा, वंदना व ध्यान होता है वहाँ लक्ष्मी सदा विद्यमान रहती हैं । जहाँ सदाचारी ब्राह्मणों की सेवा व सम्पूर्ण देवताओं का अर्चन होता है, वहाँ पद्ममुखी साध्वी लक्ष्मी विराजती हैं ।''

तदनंतर महालक्ष्मी की कृपा से देवताओं ने दुर्वासा मुनि के शाप से मुक्त होकर दैत्यों के हाथ में गये हुए अपने राज्य को प्राप्त कर लिया ।

पूज्य बापूजी कहते हैं : ''सफलता साधनों में नहीं अपितु सत्त्व में निवास करती है । जो छल-कपट व स्वार्थ का आश्रय लेकर, दूसरों का शोषण करके सुखी होना चाहते हैं उनके पास वित्त, धन आ सकता है परंतु लक्ष्मी नहीं आ सकती । जो लोग जप-ध्यान-प्राणायाम करते हैं, आय का कुछ हिस्सा दान करते हैं, शास्त्र के ऊँचे लक्ष्य को समझने के लिए महापुरुषों का सत्संग आदरसहित सुनते हैं उनका भविष्य मोक्षदायक है । वे समझदार, श्रद्धावान प्रभुप्रेमी मनुष्य भगवद्सुख, भगवद्ज्ञान, भगवद्रस से सम्पन्न मोक्षदा मति के धनी हो जाते हैं । अपनी सात-सात पीढ़ियों के तारणहार बन जाते हैं । धन्य हैं वे श्रद्धावान !'' ❐

(पृष्ठ ८ 'बिहार बाढ़-राहत सेवाकार्य' का शेष)

बाढ़-प्रभावित क्षेत्रों में पहुँचे सेवादल के सदस्य अपनी जान की परवाह न करते हुए भीषण धारा को पार करके भी राहत-सामग्री बाँट रहे हैं । देश में आयी हर प्राकृतिक आपदा में सेवा हेतु शीघ्र पहुँचकर **'नर-सेवा ही नारायण-सेवा है'** उक्ति को चरितार्थ करनेवाले बापूजी के शिष्यों द्वारा बिहार की इस आपदा में भी बड़े जोश के साथ सेवाकार्य चलाये जा रहे हैं । उनकी निःस्वार्थ सेवा को देख यहाँ के अनेक क्षेत्रों से सेवा हेतु आमंत्रण आ रहे हैं ।

बाढ़पीड़ितों के सर्वांगीण विकास के लिए पुरनिया से ५० कि.मी. दूर जानकी नगर में 'संत श्री आसारामजी नगर' बनाया गया है । इसमें हजारों परिवारों को अस्थायी कुटिया बनाकर दी जा रही है ताकि वे स्वतंत्रता से रह सकें एवं सुकून की साँस ले सकें । यहाँ भोजन के अलावा मच्छरजाली, ट्रंक, तेल, साबुन, बच्चों के लिए दूध और बिस्किट, चिउड़ा, शक्कर, मोमबत्ती, माचिस आदि जीवनोपयोगी सामग्री का वितरण, चिकित्सा सेवा तथा भजन, कीर्तन, सत्संग आदि का लाभ बाढ़पीड़ितों को मिले ऐसी व्यवस्थाएँ हो रही हैं । उन्हें जीवन जीने का बेहतर तरीका मिले व उनका जीवन उन्नत हो सके इसलिए प्रयास जारी हैं । ❐

सं|स्था||स|मा|चा|र

('ऋषि प्रसाद' प्रतिनिधि)

जिस तरह अग्नि में डालने से लोहा अग्निरूप हो जाता है, उसी प्रकार संत-समागम से मनुष्य संतों की अनुभूति को अपनी अनुभूति बना सकता है । ईश्वर की राह पर चलते हुए संतों को जो अनुभव हुए हैं, वे उन्हें वचनों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाते हैं । इस कारण उनके सत्संग में आनेवाले लोगों के जीवन में रौनक आ जाती है, उन्हें सच्चा सुखमय जीवन जीने की राह मिल जाती है । सत्संग से ही सुंदर समाज का निर्माण संभव है । इसका जिन्होंने अनुभव किया है वे भाग्यशाली भक्तजन किसी भी परिस्थिति में सत्संग के बिना रह नहीं सकते । इतना ही नहीं, वे दूसरों को भी ऐसा अनुपम लाभ दिलाने के लिए सत्संग में आने की प्रेरणा देते रहते हैं, सत्संग में लाने का प्रयत्न करते रहते हैं । इस पुनीत कार्य में वे तो पावन होते ही हैं, औरों को भी पावन करते हैं । **धन्या माता पिता धन्यो...**

जयपुर (राज.), ७ सितम्बर : ब्रह्मज्ञानी महापुरुष जहाँ होते हैं वहाँ भक्त भी खिंचे-खिंचे चले आते हैं । सूर्य के उगनेमात्र से सूर्यमुखी खिल जाते हैं, ऐसे ही ज्ञानतेज-सम्पन्न सत्पुरुषों के वचनों से १-२ नहीं हजारों-लाखों मुरझाये हुए हृदय खिल उठते हैं । ७ सितम्बर को किसी पूर्व-आयोजन के बिना ही जयपुर आश्रम में पूज्य बापूजी का सत्संग-कार्यक्रम सम्पन्न हुआ । यहाँ हजारों की संख्या में उपस्थित क्षेत्रीय जनता ने पूज्य बापूजी की ओजस्वी-तेजस्वी वाणी के माध्यम से बही ब्रह्मज्ञान की वर्षा का लाभ लिया ।

दिल्ली, १३ से १५ सितम्बर : प्रोष्ठपदी पूर्णिमा, अनंत चतुर्दशी व सर्वपितृ अमावस्या के पर्वों से सम्पन्न रहा द्वारका, दिल्ली के मैदान में आयोजित तीन दिवसीय सत्संग-कार्यक्रम । विशाल प्रांगण, विशाल जनसैलाब और उनकी विशाल श्रद्धा का समंदर तो देखते ही बनता था !

भोजन मनुष्य-तन की खुराक है लेकिन मनुष्य-जीवन की खुराक क्या है ? इस पर प्रकाश डालते हुए यहाँ पूज्य बापूजी ने कहा : ''सत्संग मनुष्य-जीवन की खुराक है । सत्संग के द्वारा ही सत्संग की महिमा का पता चलता है ।

तीरथ नहाये एक फल, संत मिले फल चार ।
सद्‌गुरु मिले अनंत फल, कहत कबीर विचार ॥

सद्‌गुरु का सत्संग अनंत फल देता है । जिस फल का अंत न हो वह है अनंत । संत अपने-आपे का ज्ञान देते हैं । सत्संग में जाने से मनुष्य सुख-दुःख, पाप-पुण्य, लाभ-हानि के प्रभाव से ऊपर उठता है । सत्संग से घर में आपसी फूट नहीं, टूट नहीं बल्कि आपसी प्रेम बढ़ता है, समझ बढ़ती है । सत्संग दुःखदायी विकारी आकर्षण छुड़ाकर दूरदर्शी बना देता है। सत्संग में ऐसी ताकत है कि वह जीव के करोड़ों-करोड़ों हीन विचारों को एवं छुपे हुए अपराध-वृत्ति के संस्कारों को भी मिटा देता है ।''

पूज्यश्री ने सर्वपितृ तर्पण- श्राद्ध की महिमा बताते हुए कहा कि ''ऐसा संयोग काफी अंतराल के बाद आता है । सभी गृहस्थियों को अपने-अपने पितरों की तृप्ति के लिए श्राद्ध अवश्य करना चाहिए ।

मानव-जीवन में तीन तरह के ऋण होते हैं : (१) पितृऋण (२) देवऋण (३) ऋषिऋण । देवाराधन, देवपूजन, जप आदि करके देवऋण से, माता-पिता की सेवा और श्राद्ध करके पितृऋण से तथा सत्शास्त्रों का पठन, श्रवण, प्रचार-प्रसार करके ऋषिऋण से उऋण होकर उनकी प्रसन्नता और सहयोग प्राप्त किया जाता है ।''

पूज्य बापूजी ने जड़-चेतन में बसे परमात्मा को वेदों, उपनिषदों, गीता एवं भागवत के सिद्धांतों का सार बताते हुए भक्तों को भगवद्‌रस से तृप्त कर दिया । क्षण-क्षण में, कण-कण में, मन-मन में बसे जिन भगवान को 'गीता' में **'वासुदेवः सर्वम्'** करके बताया गया है, 'भागवत' में **'सच्चिदानंद-रूपाय'** करके जिनकी ओर इशारा किया गया है, उपनिषद् में **'ईशावास्यमिदं सर्वम्'** करके जिसे लक्षित किया गया है, उस परम सत्य

को पूज्य बापूजी ने सर्वव्यापी ॐकार की आराधना द्वारा सरलता से प्राप्त करने की युक्ति बतायी। धन्य हुए पूर्णिमा व्रतधारी व लाखों भक्त और सत्संग का सजीव प्रसारण करनेवाला 'जी जागरण' चैनल, जिसके माध्यम से करोड़ों भक्तों ने इस अनमोल अवसर का लाभ लिया।

१३ सितम्बर को दिल्ली में हुए बम-विस्फोटों में अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए लोगों की सद्‌गति हेतु पूज्य बापूजी ने १४ व १५ सितम्बर को सत्संगियों से भगवन्नाम-जप करवाकर उसका पुण्यफल अर्पण करवाया।

सूरत आश्रम (गुज.), १५ सितम्बर (दोपहर से) : सूरत के साधकों की, समिति की सेवा फलीभूत हुई और एक ही महीने में दो बार बापूजी का सत्संग-दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य उन्हें प्राप्त हुआ। यहाँ बड़ी संख्या में उपस्थित होकर गुजरात व आसपास के राज्यों की जनता ने कुप्रचारकों एवं साजिशकर्ताओं के मुँह पर करारा तमाचा जड़ दिया।

पूज्य बापूजी ने सत्संग में कहा : ''जिनके पास अपनी समझ है, अपना अनुभव है, अपनी संस्कृति है, अपनी आस्था है, अपनी मति-गति है उनको कोई गुमराह कर दे और वे मान जायें ऐसा नहीं है। हिन्दू दयालु हैं, उदार हैं, सहिष्णु हैं लेकिन कायर नहीं हैं, मूर्ख नहीं हैं, पलायनवादी नहीं हैं।''

पूज्यश्री ने सत्संग में वैदिक सनातन संस्कृति की महिमा भी बतायी : ''वैदिक ज्ञान के अनुसार उपासना करो तो जो वासुदेव ब्रह्मांडों में बस रहा है वह अनेक रूप लेकर आता है, फिर एक रूप भक्त के यहाँ प्रकट हो जाय तो क्या बड़ी बात है ! और उसे केवल भक्त के यहाँ नहीं, सबके हृदय में प्रकट करने की कला सिखानेवाली जो संस्कृति है उसको सनातन संस्कृति कहते हैं और ऐसा जो धर्म है उसको सनातन हिन्दू धर्म कहते हैं।''

अमदावाद आश्रम : १६ सितम्बर को पूज्य बापूजी का अमदावाद आश्रम में पदार्पण हुआ। पूज्यश्री लोकसंत हैं। कर्तृत्व-अकर्तृत्व से परे होते हुए भी लोकमर्यादा की प्रतिष्ठा एवं भारतीय संस्कृति के प्रति समाज में जागृति पैदा करने हेतु बापूजी ने प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी श्राद्धकर्म सम्पन्न किया।

गुजरात की जनता के अलावा देश के विभिन्न भागों से हजारों की संख्या में भक्तगण बापूजी के एकांतकालीन सत्संग का लाभ लेने हेतु अमदावाद आश्रम में उपस्थित हुए थे। अब बापूजी के आश्रमों में पहले से भी अधिक लोग आकर यहाँ के पवित्र वातावरण से प्रभावित होते हैं एवं कुप्रचारकों की पोल जान जाते हैं। बापूजी की अमृतवाणी में कुप्रचार करनेवालों के लिए भी सद्‌भाव एवं हितभावना देखकर सत्संगियों का हृदय बापूजी के प्रति परम आस्था एवं अहोभाव से भर जाता है व उन्हें **वासुदेवः सर्वम्** की दिव्य ज्ञानदृष्टि से सम्पन्न सुदुर्लभ महात्मा सुलभ होने का महान आनंद प्राप्त होता है और उनका मस्तक श्रद्धाभाव से झुक जाता है।

पूज्य बापूजी के वचनामृत में आया : ''हम किसीकी बुराई नहीं चाहते, किसीके लिए बुरा नहीं सोचते, बुरा नहीं बोलते; सबका मंगल चाहते हैं। सबको भगवान सद्‌बुद्धि दें, अल्लाह सद्‌बुद्धि दें क्योंकि हम जानते हैं अल्लाह कहो, भगवान कहो, गॉड कहो- एक ही परमात्मा सर्वत्र व्याप रहा है। इसी अद्वैत भावना से विश्व में शांति रहेगी, कुटुम्ब में शांति रहेगी, समाज में शांति रहेगी। तत्त्वज्ञान की दृष्टि से सबमें एक परमात्मा छुपा है इसलिए मुझे बड़ी शांति है, बड़ी प्रसन्नता है। कितना भी कुप्रचार हो जाय, मुझे अशांति नहीं होती।

कुछ लोग बोलते हैं : 'देखो, संकट-पर-संकट आये बापूजी पर।' बोलनेवाले बोल देते हैं लेकिन हम कभी-कभी खुल के बोल देते हैं कि चिंता और संकट, मुसीबत इधर आते हैं तो परेशान हो जाते हैं कि हम कहाँ आ गये ! कैसा है गुरु का ज्ञान ! कैसा है वेदांत का ज्ञान ! कैसा है वासुदेव-तत्त्व का ज्ञान ! मेरा कहना यही है कि आप भी आत्मज्ञान पाकर निहाल हो जाओ, खुशहाल हो जाओ, पवित्र को भी पवित्र करनेवाला आत्मज्ञान पा लो।'' ❑
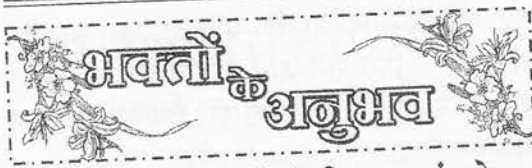
अंतर्यामी पूज्य बापूजी ने की विलक्षण अंतःप्रेरणा

मैं पूज्य बापूजी से दीक्षित हूँ । मेरी दाल मिल की फैक्ट्री है, जो कि ब्यावर (राज.) के रीको औद्योगिक क्षेत्र में स्थित है । ९ जून २००८ को सुबह ९.३० बजे मुझे अंतःप्रेरणा हुई व मैंने फैक्ट्री में कार्यरत सभी कर्मचारियों एवं मजदूरों की छुट्टी कर दी और आश्रम द्वारा ब्यावर में हो रहे 'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' में सेवा के लिए चला गया ।

लगभग १० बजे मेरी फैक्ट्री में एक चीता (पैंथर) घुस गया । उसने पास की फैक्ट्री के एक चौकीदार को घायल कर दिया । लोगों और मीडियाकर्मियों का वहाँ जमावड़ा हो गया । चीते को पकड़ने आये एक वनकर्मी को भी उसने घायल कर दिया । वह दिन भर मेरी फैक्ट्री में ही घुसा रहा । मेरी फैक्ट्री की उस दिन छुट्टी हो जाने के कारण चीता किसीको नुकसान पहुँचा सके ऐसा मौका नहीं आया । आखिर रात को १० बजे जयपुर से आये दल ने उसे पकड़ा ।

उस दिन मैंने पिछले पाँच सालों में पहली बार फैक्ट्री की छुट्टी रखी थी । चीते के आने से आधा घंटा पहले फैक्ट्री की छुट्टी कराने की प्रेरणा देनेवाले अंतर्यामी गुरुदेव पूज्य बापूजी को कोटि-कोटि प्रणाम । **– मदन लौंगानी, अजमेर रोड, ब्यावर (राज.) ।**

एक पल में १२ साल की मेहनत बच गयी !

मैं गोपीनाथ सुमालय अनुष्ठान करने हेतु आश्रम में आया था । मेरा ढाई साल से मौन था । एक दिन सुबह ५-३० बजे ब्रह्मवेला में बापूजी सत्संग-मंडप में आये व मेरी उनसे बातचीत हुई ।

पूज्यश्री ने पूछा : ''कितने दिनों से यहाँ पर हो ?''

मैंने कहा : ''जी, १२ दिनों से हूँ । ४० दिन का अनुष्ठान है ।''

बातों-ही-बातों में मैंने अपनी इच्छा व्यक्त की : ''बापूजी ! मेरी इच्छा है कि मैं १२ साल का अनुष्ठान करूँ ।''

बापूजी : ''क्यों मुसीबत मोल लेना चाहते हो ? तुमने तो परमात्मा को भी १२ साल के लिए रोक दिया कि इतना करूँगा तभी मिलेगा ।''

पूज्य बापूजी ने प्रणव के गुंजन की विधि, विश्रांतियोग की कुंजी दी । 'श्री योगवासिष्ठ' पढ़ते-पढ़ते ध्यानस्थ होने का मार्ग बताया । १२ साल की दूरी दूर करनेवाले दूरद्रष्टा का मार्गदर्शन पाकर मैं धन्य हो गया और एक पल में ही १२ साल की मेहनत बच गयी ! **– गोपीनाथ सुमालय**

तोलनूर, जि. पालघाट (केरल) ।

पीलिया से मुक्ति मिली

जून २००८ में मैं पीलिया से पीड़ित था और काफी सीरियस था । कुछ सुधार नहीं हो रहा था । मैं बिस्तर से उठ भी नहीं पाता था और उलटियाँ-ही-उलटियाँ हो रही थीं । तब मैंने अमदावाद आश्रम फोन किया तो मुझे पीलिया का मंत्र जपने के लिए कहा गया ।

मैं लेटे-लेटे मंत्र जपने लगा । मंत्र जपते-जपते करीब आधे घंटे बाद मैंने देखा कि बापूजी के जिस स्वरूप को मैं लेटे-लेटे देखते हुए जप कर रहा था, उसके सामने एक प्रकाश का गोला दिखायी दिया । प्रकाश के गोले को देखकर मेरे शरीर में बिजली-सी दौड़ गयी और मैं उसको देखकर फूट-फूटकर रोने लगा । मगर मैंने जप चालू रखा, फिर अचानक ही खिलखिलाकर जोर-जोर-से हँसने लगा । जप पूरा होने के बाद मेरे स्वास्थ्य में चमत्कारिक परिवर्तन आया और आज मैं स्वस्थ हूँ । मेरे श्रद्धा-विश्वास की जीत हुई । मेरा वजन काफी गिर गया है पर मैं बापूजी के आशीर्वाद से फिर से मेनटेन कर रहा हूँ ।

– महावीर सिंह, लंदन (यू.के.) ।

(दूरभाष क्र. : ००४४-७९३९२३६५०३) ❑

वर्ष 2009 के वॉल कैलेंडर

पूज्य बापूजी के मनभावन फोटो व अनमोल आशीर्वचनों से भरपूर एवं जीवन में नयी चेतना का संचार कर दे ऐसी दिव्य प्रेरणा से ओतप्रोत वॉल कैलेंडर।

'विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविर' में भाग लेकर अपने जीवन को उन्नत बनाते हुए कुशालपुरा, जि. पाली (राज.) तथा मोझरी, जि. अमरावती (महा.) के धनभागी विद्यार्थी।

जामनगर (गुज.) तथा 'बाल संस्कार केन्द्र' अंबड, जि. जालना (महा.) के विद्यार्थियों में 'बाल संस्कार' पुस्तक, सुवाक्ययुक्त नोटबुक और एकाग्रता व स्मृतिशक्ति वर्धक स्वस्तिक का निःशुल्क वितरण।
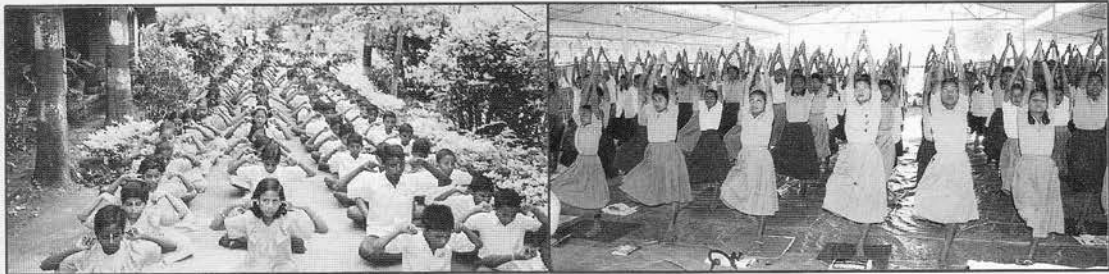
जयपुर (उड़ीसा) के 'बाल संस्कार केन्द्र' तथा सुथारपाडा, जि. वलसाड (गुज.) के विद्यार्थियों को भ्रामरी प्राणायाम तथा योगासनों का प्रशिक्षण।
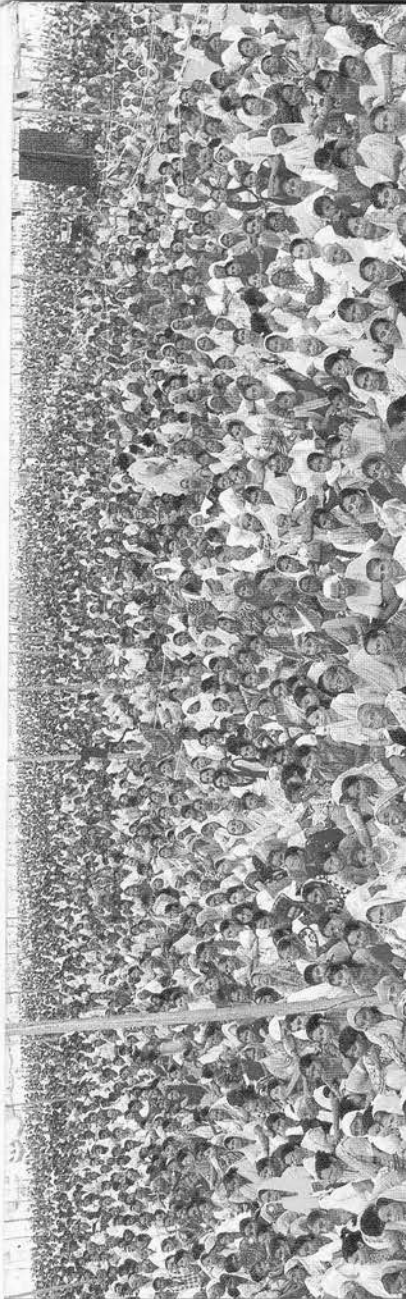
प्रोष्ठपदी पूर्णिमा पर एक ही दिन में द्वारका-दिल्ली और सूरत (गुज.) इन दो जगहों पर सत्संग होने पर भी जनसैलाब में हुई बढ़ोतरी लोगों को चकित कर गयी। यह तो केवल द्वारका-दिल्ली का नजारा है। उसी दिन सूरत में भी बापूजी के सत्संग में विशाल भीड़ उमड़ी थी।

बिहार में बाढ़-राहत सेवाकार्य

चिकित्सा-सेवा

बाढ़-पीड़ितों के लिए खाद्य सामग्री के पैकेट तैयार करते हुए पूज्यश्री के शिष्य।

जहाँ रसोईघर बनाने की सुविधा मिली, वहाँ बाढ़पीड़ितों को ताजा, गरमा-गरम भोजन कराया गया तथा अति जलवाले स्थानों पर भोजन-पैकेट बनाकर वितरित किये गये।

1 October 2008
RNP. NO. GAMC 1132/2006-08
WPP LIC NO. GUJ-207/2006-08
RNI NO. 48873/91
DL(C)-01/1130/2006-08
WPP LIC NO.U(C)-232/2006-08
G2/MH/MR-NW-57/2006-08
WPP LIC NO. MH/MR/14/07-08
'D' NO. MR/TECH/47-4/2008

Posting at PSO Ahmedabad between 25th of preceding month to 10th of current month. * Posting at ND. PSO on 5th & 6th of E.M. * Posting at MBI Patrika Channel on 9th & 10th of E.M.